Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

सत्यमेव जयते

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 25 अंक 2 | 28 फरवरी, 2025 | मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

महायोद्धा महाराजाधिराज सूरजमल

318वीं जयन्ती पर विशेष (13.02.1707–25.12.1763)

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

महाराजा सूरजमल राजस्थान के भरतपुर के महान हिंदू राजा थे जो आज भी विश्व के सिरमौर अजेय के नाम से प्रसिद्ध है। उनका शासन जिन क्षेत्रों में था वे वर्तमान समय में भारत की राजधानी दिल्ली, उत्तर प्रदेश के आगरा, अलीगढ़, फिरोजाबाद, एटा, मेरठ, मुजफ्फरनगर जिले, राजस्थान के भरतपुर, धौलपुर जिले और हरियाणा के गुरुग्राम, रोहतक, झज्जर, फरीदाबाद, रेवाड़ी, मेवात जिलों के अंतर्गत हैं। राजा सूरजमल में वीरता, धीरता, गंभीरता, उदारता, सतर्कता, दूरदर्शिता, सूझबूझ, चातुर्य और राजमर्मज्ञता का सुखद संगम सुशोभित था। मेल–मिलाप और सह–अस्तित्व तथा समवेशी सोच को आत्मसात करने वाली भारतीयता के वे सच्चे प्रतीक थे। राजा सूरजमल के समकालीन एक इतिहासकार ने उन्हें 'जाटों का प्लेटो' कहा है। इसी तरह एक आधुनिक इतिहासकार ने उनकी स्पष्ट दृष्टि और बुद्धिमता को देखते हुए उनकी तुलना ओडिसस से की है।

महाराजा सूरजमल विश्व के सिरमौर एशियाई प्लेटो, कूटनीतिज्ञ, सर्वश्रेष्ट रणनीतिज्ञ 18वीं सदी के गोर्व–गिरी थे। लड़ाई के मैदान में मुंह में घोड़े की लगाम पकड़कर, दोनों हाथों से तलवारे चलाने की कला में माहिर थे और अपने समय के एक शक्तिशाली योद्धा थे। इन्होंने अपने जीवन में 80 युद्ध लड़े और कभी भी किसी युद्ध में नहीं हारे। उन्होंने मुगल मराठे अंग्रेज और राजपूत सभी को हराया। बागडूं के युद्ध में तो उन्होंने राजपूतों और मराठों को करारी शिख्सत दी थी। उनके बाल्यकाल से ही उनके शौर्य और बुद्धिमता के प्रमाण मिलते हैं। उन्हें बचपन से ही युद्ध कौशल और शासन प्रबंधन की शिक्षा दी गई थी। उनका शिक्षण ऐसे परिवेश में हुआ जहां उन्होंने राजनीतिक चातुर्य और सामरिक नीतियों को समझा। उन्हें संस्कृत, हिंदी और फारसी भाषाओं का भी अच्छा ज्ञान था, जो उस समय के शिक्षित शासकों की पहचान थी। उनकी शिक्षा ने उन्हें एक समर्थ और निपुण योद्धा बनने में मदद की।

महाराजा सूरजमल उत्तर मध्यकालीन भारतीय राजनीति के गौरव–गिरि थे। वे अपने समय के सर्वश्रेष्ट नीतिज्ञ और रमणिक कुशल योद्धा थे। उनका जन्म 13 फरवरी, 1707 को भरतपुर के संस्थापक राजा बदन सिंह के घर में हुआ था। उन्होंने बचपन से ही युद्धों में भाग लेना आरम्भ कर दिया था। उनका बचपन का नाम सुजान सिंह था लेकिन बाद में उसके प्रचण्ड प्रताप को देखकर ही राजपुरोहित ने इस तेजस्वी बाल रवि समान शिशु का नामकरण सूर्यमल्ल उपाख्य सूरजमल किया था।

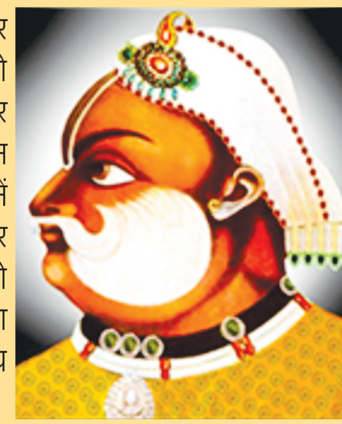

भारत की शान भरतपुर के महाराजा सूरजमल का कद 7 फुट 2 इंच तथा 150 कि.ग्रा. भारी भरकम शरीर के स्वामी थे। महाराजा सूरजमल विश्व में अकेले ऐसे योद्धा थे जोकि दोनों हाथों से तलवार चलाने की कला के धनी थे। 20 अगस्त 1748 ई. में बागरू की लडाई में भारी बारिश के बीच शरीर पर 50 घाव होने के बावजूद अकेले ही 160 दुश्मनों को मौत के घाट उतार दिया था। एशिया के बहुत से देश इनसे मदद मांगने आते थे। इन्होंने अपने पूरे जीवन काल में 80 युद्ध लड़े और सभी में ये विजयी रहे। मुगल, मराठे, राजपूत व अंग्रेज ये सभी इनसे खौफ खाते थे। इन्हें कोई भी नहीं हरा पाया। इनके उत्तराधिकारी बेटे महाराजा जवाहर सिह ने दिल्ली जाकर मुगलों को बेरहमी से पीटा और दिल्ली को विजय करके मुगलों का सुरक्षा कवच कहे जाने वाले लालकिले के दरवाजे को उखाड़ कर भरतपुर में ला पटका जो अब भी भरतपुर के लोहागढ़ किले में रखा है।

महाराजा सूरजमल ने अपने शासनकाल के दौरान मुगल सामाज्य के साथ कई बार संघर्ष किया। उनके राज्य की सीमा मुगल सामाज्य से लगती थी, जिससे अक्सर संघर्ष की प्रस्थितियां बनी रहती थीं। सूरजमल ने मुगल सेनाओं के खिलाफ कई युद्धों में भाग लिया और अनेक बार विजय प्राप्त की। उनकी सबसे प्रमुख विजयों में से एक दिल्ली निकट आलमपुर की लड़ाई थी। उनके युद्ध कौशल और रणनीति ने मुगलों को कई बार परास्त किया। ये संघर्ष न केवल सूरजमल की सैन्य क्षमता को दर्शाते हैं, बल्कि उनकी राजनीतिक

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

चतुराई को भी प्रकट करते हैं। उनके इन प्रयासों ने भरतपुर रियासत को मजबूती प्रदान की और उसे मुगल साम्राज्य के प्रभाव से मुक्त रखा।

महाराजा सूरजमल ने अपने शासन काल में मराठों की भी सहायता की थी। उन्होंने मराठा सेनाओं के साथ मिलकर मुगलों के विरुद्ध युद्ध में भाग लिया था। इस सहयोग ने भारतीय उपमहाद्वीप की राजनीति में एक महत्वपूर्ण बदलाव लाया। सूरजमल की सेना ने मराठों के साथ मिलकर अनेक महत्वपूर्ण युद्धों में भाग लिया, जिसमें उनकी रणनीतिक क्षमता और युद्ध कौशल का परिचय मिलता है। उनका यह कदम न केवल उनके शत्रुओ के विरुद्ध एक साम्राज्य नीति थी, बल्कि यह भी दर्शाता है कि वे भारतीय साम्राज्य की रक्षा और स्थिरता के लिए कितने प्रतिबद्ध थे। महाराजा सूरजमल का यह कदम उनके दूरदर्शी नेतृत्व का परिचायक है। महाराजा सूरजमल ने 1761 ई. में मराठों और अहमदशाह अब्दाली के बीच में हुये युद्ध में मराठों को सलाह दी थी कि– अपने बीबी बच्चों को मेरे अधीन किलो में सिफ्ट कर दों। लड़ाई आमने सामने ना होकर गौरिला पद्धति अपनाई जायें। सर्दी की बजायें गर्मी में युद्ध शुरू किया जाये और मेरे पास से कम से कम 10 हजार सैनिकों की सहायता ली जाये, लेकिन मराठों ने महाराजा सूरजमल की कोई बात नहीं मानी और जनवरी में ही युद्ध शुरू कर दिया। अपनी गलतियों की वजह से मराठें युद्ध हार गये। सेनापति भाऊ मारा गया और 20–22 हजार सैनिक भी मारे गये बाकी बचे भरतपुर भाग गये और जो बिमार और घायल थे उनकी महाराजा सूरजमल ने उपचार करवाया और सहायता की। उनको महाराष्ट्र छोड़ने का प्रबन्ध किया और अपने 2500 सैनिक उनके साथ मदद के लिये भेजे जो मराठा फौज ने वापिस नहीं आने दिये और महाराष्ट्र में नासिक जिले बसा लिये। आज भी नासिक जिले में जाटों के विभिन्न गोत्रों के 22 गांव है। जिनको "जाट बाईसा" कहा जाता है।

महाराजा सूरजमल ने अपने शासन काल में ब्रिटिश उपनिवेशवादी शक्तियों के साथ भी संघर्ष किया। उन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की बढ़ती हुई सता और प्रभाव का मुकाबला किया और अपनी स्वतंत्रता और संप्रभुता की रक्षा के लिए लड़े। सूरजमल की सेनाओं ने कई मौकों पर ब्रिटिश सेनाओं को चुनौती दी और उन्हें कई बार पराजित किया। इस संघर्ष ने भरतपुर रियासत की स्वतंत्रता और संप्रभुता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महाराजा सूरजमल के इस प्रयास ने भारतीय उपमहाद्वीप में ब्रिटिश प्रभाव के विस्तार को धीमा कर दिया और उन्हें एक कुशल योद्धा और साहसी नेता के रूप में स्थापित किया।

महाराजा सूरजमल केवल एक वीर योद्धा ही नहीं, बल्कि एक कुशल प्रशासक और जन कल्याणकारी शासक भी थे। उन्होंने अपनी रियासत में जन कल्याण के लिए अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए। उन्होंने कृषि, जल प्रबंधन और व्यापार के क्षेत्र में सुधार किए। सूरजमल ने कई नहरों का निर्माण करवाया, जिससे कृषि क्षेत्र में वृद्धि हुई। उनके शासनकाल में जनता के लिए सुविधाओं का विकास हुआ और शिक्षा को भी बढ़ावा दिया गया। महाराजा सूरजमल के ये प्रयास उनके जन–केंद्रित शासन का परिचायक है। उनके इन कार्यों ने उनकी प्रजा के जीवन स्तर को उन्नत बनाया और उन्हें एक समर्थ और लोकप्रिय शासक के रूप में स्थापित किया।

वे एक कुशल योद्धा और युद्धकला के मास्टर थे। उनके युद्ध कौशल में रणनीति, ताकत और चतुराई का संगम था। उन्होंने युद्ध के लिए विशेष तरीके और तकनीकों का विकास किया, जो उस समय के युद्ध कला में क्रांतिकारी थे। सूरजमल ने दुश्मन की ताकत और कमजोरियों का बारीकी से अध्ययन करके युद्ध की योजना बनाई। उनकी युद्ध रणनीति में आश्चर्यजनक हमले, घेराबंदी तकनीकें, गोरीला युद्ध प्रणाली और दुश्मन की रसद लाइनों को बाधित करना शामिल था। उन्होंने अपनी सेना को अत्याधुनिक हथियारों और रक्षा तकनीकों से लैस किया। महाराजा सूरजमल की युद्ध नीति में न केवल शारीरिक शक्ति बल्कि मानसिक चातुर्य और रणनीतिक सोच भी शामिल थी। उनके युद्ध कौशल ने उन्हें अपने समय के महानतम योद्धाओं में से एक बना दिया था और उनकी विजयों ने उन्हें इतिहास में अमर बना दिया।

21 सितम्बर 1743 ईस्वीं में जयपुर के राजा सवाई जयसिंह की मृत्यु के बाद उसके दोनों पुत्रों ईश्वरी सिंह और माधों सिंह में गृह युद्ध हो गया और यह गृह युद्ध कई साल तक चलता रहा। सिहांसन पर बड़े पुत्र का हक बनता था लेकिन छोटे बेटे माधव सिंह के मामा मेवाड़ी सम्राट जगत सिंह व कोटा, बुन्दी, जोधपुर, मराठे मलाहराव होल्कर, गंगाधर तांतियां व जयपुर की सेना मिलाकर सात

राज्यों की सेना ने इक्कठे होकर माधव सिंह को राजगद्दी पर बैठा दिया। बड़े बेटे ईश्वरी सिंह ने अपने पिता के दोस्त मुंह बोले ताऊ भरतपुर सम्राट बदन सिंह से मदद की गुहार लगाई। अगस्त 1748 ईस्वीं में 15 हजार सैनिक देकर सूरजमल को ईश्वरी सिंह की सहायता के लिये भेजा। इस युद्ध में सभी सातों राज्यों की सैना को हरा कर ईश्वरी सिंह को गद्दी पर बैठानें वाले महाराजा सूरजमल ही थे। महाराजा सूरजमल ने मुसलाधार वर्षा के बीच एक दिन में 160 सैनिकों को मार गिराया था और सातों राज्यों की सवा लाख सेना को करारी शिकस्त दी थी।

महाराजा सूरजमल एक महान योद्धा और शासक थे, लेकिन उनके जीवन में कई बार ऐसे मौके आए जब उन्होंने गलतियाँ की। इन गलतियों में से कुछ युद्ध के मैदान में हुई, जबकि कुछ राजनीतिक निर्णयों में। एक बार, उन्होंने अपनी सेना को एक ऐसे युद्ध में झोंक दिया जिसके लिए वे पूरी तरह से तैयार नहीं थे, जिसका परिणाम उनके लिए हानिकारक साबित हुआ। इसके अलावा, कुछ मौकों पर उन्होंने अति आत्मविश्वास के कारण गलत रणनीतिक निर्णय लिए, जिससे उनकी सेना को नुकसान हुआ। राजनीतिक क्षेत्र में भी, कभी–कभी उन्होंने अपने सहयोगियों और शत्रुओं की योजनाओं का सही आँकलन नहीं किया, जिससे उन्हें राजनीतिक रूप से नुकसान उठाना पड़ा। इन गलतियों ने सूरजमल को यह सिखाया कि युद्ध और राजनीति दोनों ही क्षेत्रों में सावधानी और समग्र विचार–विमर्श आवश्यक हैं। उनकी इन गलतियों से यह सबक मिलता है कि किसी भी निर्णय में जल्दबाजी और अति आत्मविश्वास से बचना चाहिए।

25 दिसम्बर, 1763 को वह सुबह–सुबह दिल्ली के निकट हिंडन नदी के तट पर टहल रहे थे, उस समय वह निहत्थे घुम रहे थे तभी दुश्मनों ने अचानक एक साजिश के तहत उन पर आक्रमण कर दिया। जिसमें वे बहुत वीरता के साथ लड़े और अधिकतर दुश्मनों को मौत के घाट उतारते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। महाराजा सूरजमल की शहादत ने उन्हें भारतीय इतिहास में अमर वीर योद्धा के रूप में स्थापित किया। सूरजमल ने अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक अपनी रियासत और जनता के लिए लड़ाइ लड़ी। उनकी शहादत ने उनके समर्थकों और प्रजा में गहरा प्रभाव छोड़ा। उनकी शहादत के बाद भी उनकी वीरता के किस्से और उनके द्वारा किए गए कार्यों की कहानियां संस्कृति और इतिहास में जीवित रहे। उनके बलिदान ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीयता की भावना को प्रेरित किया। महाराजा सूरजमल की शहादत और उनकी वीरता की कहानियां आज भी भारतीय इतिहास और संस्कृति में उन्हें एक नायक के रूप में याद किया जाता हैं। उनका जीवन और बलिदान भारतीय इतिहास के एक गौरवशाली अध्याय के रूप में सम्मानित है।

महाराजा सूरजमल की कार्यशैली से हमें कई महत्वपूर्ण पाठ सीखने को मिलते हैं। उनके जीवन और कार्यों से प्रेरणा लेकर हम अपने जीवन और कैरियर में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। सबसे पहले, उनकी दूरदर्शिता और रणनीतिक सोच हमें बताती है कि किसी भी समस्या का समाधान ढूंढने के लिए गहराई से विचार करना और योजना बनाना जरूरी है। उनकी युद्ध कौशल और राजनीतिक चतुराई हमें सिखाती है कि संकट के समय में शांत और सजग रहना कितना महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, सूरजमल का जन कल्याण के प्रति समर्पण हमें यह दर्शाता है कि व्यक्तिगत लाभ से बढ़कर सामाजिक कल्याण होना चाहिए। उनके जीवन से यह भी सिखने को मिलता है कि कठिन परिस्थितियों में धैर्य और साहस के साथ काम लेना चाहिए। अंत में, महाराजा सूरजमल की गलतियों से हमें यह पाठ मिलता है कि हर गलती एक सीख है और इससे उबरकर आगे बढ़ना चाहिए। उनका जीवन हमें नेतृत्व, साहस, और विश्वास की महता का पाठ पढ़ाता है।

महाराजा सूरजमल का जीवन और उनकी उपलब्धियाँ भारतीय इतिहास के एक सुनहरे अध्याय का हिस्सा है। उनकी वीरता, बुद्धिमता, और जन कल्याण के प्रति समर्पण आज भी हमें प्रेरणा देते हैं। उनके युद्ध कौशल, राजनीतिक चतुराई, और उनकी शहादत ने उन्हें एक अमर नायक के रूप में स्थापित किया है। महाराजा सूरजमल का जीवन हमें शक्ति, साहस और आत्म–सम्मान का पाठ पढ़ाता है, जो हर युग में मानवता के लिए प्रेरणादायक है।

ऐसे कीर्तिमान महापुरूष महायोद्धा को लेखक शतः शतः नमन करता है।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए.इतिहास
एच.एफ.एस (सेवानिवृत)
(मो० 9466110050)

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म 12 फरवरी, 1824 ई. में गुजरात के टंकारा नामक स्थान पर हुआ था। स्वामी जी आधुनिक भारत के महान चिन्तक, समाज सुधारक तथा आर्य समाज के संस्थापक थे। इनके बचपन का नाम 'मूलशंकर' था। उन्होंने वेदों के प्रचार और आर्यावर्त को स्वतंत्रता दिलाने के लिए मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। वे एक महान सन्यासी एवं चिन्तक थे। उन्होंने वेदों की सत्ता को हमेशा सर्वोपरि माना। "वेदों की ओर लौटों" यह उनका प्रमुख नारा था। स्वामी दयानन्द ने वेदों का भाष्य किया इसलिए उन्हें महर्षि कहते हैं क्योंकि वेदों का सरल उचारण केवल ऋषियों द्वारा ही किया जाता रहा है। स्वामी जी ने कर्म सिद्धान्त, पुर्नजन्म, ब्रह्मचर्य तथा सन्यास को अपने दर्शन के चार स्तम्भ बनायें। उन्होंने ही सबसे पहले 1876 ई. में स्वराज का नारा दिया था जिसे बाद में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने आगे बढ़ाया। प्रथम जनगणना के समय स्वामी जी ने आगरा से देश के सभी आर्य समाजियों को यह सन्देश भिजवाया था कि सभी सदस्य अपना धर्म सनातन धर्म लिखवायें क्योंकि हिन्दु शब्द विदेशीयों की देन है और फारसी भाषा में इसका अर्थ चारों और डाकू है। स्वामी जी के विचारों से अनेक महापुरूष प्रभावित हुए जिनमें भिकाजीकामा, भगत सिंह, पं. लेखराम आर्य, स्वामी श्रद्धानन्द, चौ. छोटूराम, पं. गुरूदत्त विधार्थी, श्यामजी कृष्णा वर्मा, विनायक दामोदर सावरकर, लाला हरदयाल, मदनलाल ढ़ीगरा, रामप्रसाद बिसमिल, महादेव गोविन्द रानाडे, महात्मा हंसराज, ला. लाजपतराय इत्यादि। ला. हंसराज ने 1886 में लाहौर में दयानन्द एग्लों वैदिक कालेज की स्थापना की। स्वामी श्रद्धानन्द ने 1901 ई. में हरिद्वार के निकट कांगड़ी में गुरूकुल की स्थापना की।

स्वामी जी के पिता का नाम कृष्ण जी लालजी तिवारी था और मां का नाम यशोदा बाई था। उनके पिता एक टैक्स कलैक्टर होने के साथ ब्राह्मण परिवार के एक अमीर, समृद्ध और प्रभावशाली व्यक्ति थे। पण्डित बनने के लिए वे संस्कृत, वेद, शास्त्रों व अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में लग गए। उनके जीवन में ऐसी बहुत सी घटनाएं हुई, जिन्होंने उन्हें हिन्दु धर्म की पारम्परिक मान्यताओं और ईश्वर के बारे में गम्भीर प्रश्न पुछने के लिए विवश कर दिया। एक बार शिवरात्रि की घटना है। तब वे बालक ही थे। शिवरात्री के उस दिन उनका पूरा परिवार मन्दिर में ही रूका हुआ था। रात्री का जागरण चल रहा था। परिवार के सो जाने के बाद भी वे जागते रहे कि भगवान शिव आयेंगे और प्रसाद ग्रहण करेंगे। उन्होंने देखा कि शिवजी के लिए रखे भोग को चूहे खा रहे हैं। यह देखकर स्वामी जी बालक के रूप में बहुत आश्चर्यचकित हुए और सोचने लगे कि जो ईश्वर स्वयं को चढ़ाये गए प्रसाद की रक्षा नहीं कर सकता वह मानवता की क्या रक्षा करेगा? अपने पिता जी से इस बात पर उन्होंने बहुत बहस की और तर्क दिया कि ऐसे असहाय ईश्वर की हमें उपासना नहीं करनी चाहिए। अपनी छोटी बहन और चाचा की मृत्यु होने पर जीवन मरण के प्रश्न पर चिन्तन करने लगे तो माता–पिता ने बाल्य अवस्था में उनका विवाह करने का निर्णय किया। 19वीं शताब्दी में बाल विवाह की आम प्रथा थी। लेकिन बालक मूलशंकर ने निश्चय किया कि विवाह उनके लिए नहीं बना है और 1846 में वे सत्य की खोज में निकल पड़े।

ज्ञान की खोजः– फाल्गुन कृष्ण संवत 1895 में शिवरात्री के दिन उनके जीवन में एक नया मोड़ आया। उन्हें नया बोध हुआ। वे घर से निकल पड़े और यात्रा करते हुए, वह गुरू विरजानन्द के पास पहुंचे। गुरू जी ने उन्हें पाणिनी व्याकरण, पांतजल–योगसूत्र तथा वेद–वेदांग का अध्ययन कराया। गुरू दक्षिणा में उन्होंने कहा कि विद्या को सफल करके दिखाओं, परोपकार करो, सत्य शास्त्रों का उद्धार करो, मत मतांतरो की अविद्या को मिटाओं, वेदों के प्रकाश से इस अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर करो, वैदिक धर्म का अलोक सर्वत्र विकीर्ण करो।

यही तुम्हारी गुरूदक्षिणा है। महर्षि दयानन्द जी ने अनेक स्थानों की यात्रा की। उन्होंने हरिद्वार में कुंभ के समय पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई। उन्होंने अनेक शास्त्रार्थ किए। वे कलकता में बाबू केशवचन्द्र सेन तथा देवेन्द्र नाथ ठाकुर के सम्पर्क में आए। वहीं से उन्होंने पूरे वस्त्र पहनना व हिन्दी में बोलना लिखना प्रारम्भ किया। यहीं पर ही उन्होंने वायसराय को कहा था कि विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदाई नहीं है।

आर्य समाज की स्थापनाः– ओऊम का आर्य समाज में ईश्वर का सर्वोत्तम और उपयुक्त नाम माना जाता है। महर्षि दयानन्द ने चैत्र शुकला प्रतिपदा संवत् 1932 (सन् 1875) को गोरे गांव मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उदेश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

वैचारिक आन्दोलनः– वेदों को छोड़कर अन्य धर्मग्रन्थ का प्रमाण नहीं है। इस सत्य का प्रचार करने के लिए स्वामी जी ने पूरे देश का दौरा किया और जहां–जहां गए प्राचीन परम्परा के पंडित उनसे हार मानते गए। संस्कृत भाषा का उन्हे बहुत ज्ञान था। संस्कृत में वे धारा प्रवाह बोलते थे। साथ ही वे तर्किक भी थे। उन्होंने ईसाई और मुस्लिम धर्मग्रन्थों का भी गहन अध्ययन किया और अपने चेलों से मिलकर सनातन धर्म के हक में तीन–तीन मोर्चों पर संघर्ष आरम्भ किया। दो मोर्चें तो ईस्लाम व ईसाई और तीसरा मोर्चा सनातनी हिन्दुओं का था। स्वामी जी ने बुद्धिवाद की जो मशाल जलाई थी, उसका कोई जवाब नहीं था। मगर सत्य यह था कि पौराणिक ग्रन्थ भी वेद आदि शास्त्र में आते है। सन् 1872 ई. में स्वामी जी कलकता पधारे। वहां देवेन्द्र नाथ ठाकुर और केशवचन्द्र सेन ने उनका बड़ा सत्कार किया। ब्राह्ममण समाजियों से उनका विचार विमर्श भी हुआ किन्तु ईसाई मत से प्रभावित ब्राह्ममण समाजी विद्वान पुर्नजन्म और खेद की प्रामाणिकता के विषय में स्वामी जी से एकमत नहीं हो सके। कलकता में ही केशवचन्द्र सेन ने स्वामी जी को यह सलाह दी कि यदि आप हिन्दी में बोलना आरम्भ कर दें तो देश का बहुत भला हो सकता है।

10 अप्रैल 1875 ईं. को उन्होंने मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। मुम्बई से लौटकर स्वामी जी इन्द्रप्रस्थ आए। वहां तीनों धर्मों की मिटिंग बुलाई लेकिन कोई सही परिणाम ना निकलने पर वे पंजाब आए यहां लोगों में आर्य समाज के प्रति उत्साह जागृत हुआ। समस्त कृषक समाज ने आर्य समाज के नियमों को अपनाया, क्योंकि कृषक समाज हमेशा पांखण्डवाद के विरूद्ध रहा है। ब्रह्ममणों ने आर्य समाज के नियम इसलिये नहीं माने क्योंकि ब्राह्ममण तो पांखण्डवाद के जन्म दाता रहे हैं।

समाज सुधार के कार्यः– स्वामी जी ने तत्कालीन समाज में फैली व्याप्त कुरीतियों तथा अन्धविश्वासों और रूढ़ीवादी बुराईयों का खण्डन किया जिससे वे सन्यासी योद्धा कहलाएं। वे दलितों के उद्धार के पक्षधर थे। उन्होंने स्त्री शिक्षा के लिए आन्दोलन चलाएं। बाल–विवाह व सतीप्रथा का प्रबल विरोध किया महर्षि दयानन्द समाज सुधारक तथा धार्मिक पुर्नजागरण के प्रवर्तक तो थे ही, वे ब्रह्मचर्य का पालन न करना, विधान पढ़ना–पढ़ाना, बालविवाह, विषयशक्ति, मिथ्या भाषावाद, कुलक्षण वेदविद्या का मित्थमिथ्या अर्थ करना आदि कुकर्म है। आपस में भाई–भाई लड़ते हैं तो तीसरा पंच बनकर फायदा उठाता है। इस तरह की बुराईयों से बचने हेतू सार्थक प्रचार किया गया। सन् 1857 ई. की क्रांति की रूपरेखा भी स्वामी जी के घर पर ही तैयार हुई थी। अपने प्रवचनों में लोगों को राष्ट्रवाद का प्रचार करते थे। 1857 ईं. के हरिद्वार कुम्भ के समय स्वामी जी ने आबू पर्वत से हरिद्वार तक पैदल यात्रा की थी। स्वामी दयानन्द जी ने हरिद्वार पहुंचकर एक पहाड़ी पर अलग स्थान पर डेरा जमाया। वहीं पर उन्होंने पांच ऐसे व्यक्तियों से मुलाकात की जो आगे चलकर 1857 की क्रान्ति के कर्णधार बने। इनमें नाना साहब, अजीमुला खां, बाला साहब, तात्यांटोपे तथा बाबू कुवंर सिंह प्रमुख थे। अंग्रेजों को भी स्वामी जी ने करारा जवाब दिया था।

स्वामी दयानन्द के बारे महापुरूषों के विचारः–

1. डॉ. भगवानदास ने कहा था कि स्वामी दयानन्द हिन्दु पुर्नजागरण के मुख्य निर्माता थे।
2. श्रीमती एनी बेसेन्ट का कहना था कि स्वामी दयानन्द पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने आर्यावर्त (भारत) भारतीयों के लिए घोषणा की।
3. सरदार पटेल के अनुसार भारत की स्वतंत्रता की नींव वास्तव में स्वामी दयानन्द ने ही डाली थी।
4. पट्टाभि सितारमैया का विचार था कि गांधी जी राष्ट्रपिता है पर स्वामी दयानन्द राष्ट्र पितामह हैं।
5. फ्रैंच लेखक रोमा रोला के अनुसार स्वामी जी राष्ट्रीय भावना और जन–जागृति को क्रियात्मक रूप देने में प्रगतिशील थे।
6. एक फ्रैंच लेखक रिचर्ड का कहना है कि ऋषि जी का प्रादुर्भाव लोगों को कारागार से मुक्त कराने और जातिबन्धन तोड़ने के लिए हुआ था। उनका आदर्श था आर्यवर्त (भारत) उठ, जाग, आगे बढ़। समय आ गया है नये युग में प्रवेश कर।
7. स्वामी जी बाल गंगाधर तिलक को स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार का नारा दे गए।
8. नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने स्वामी जी को आधुनिक भारत का निर्माता माना।
9. अमेरिका की मदाम ब्लेवेटस्की ने आदिशंकराचार्य के बाद बुराई पर सबसे निर्भिक प्रहारक माना।

10. सैयद अहमद खां के शब्दों में स्वामी जी ऐसे विद्वान और श्रेष्ठ व्यक्ति थे जिनका अन्य मतों वाले भी आदर करते थे।

11. वीर सांवरकर ने कहा महर्षि दयानन्द 1857 के संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा थे।

12. लाला लाजपतराय ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने हमें स्वतंत्र विचारना, बोलना और कर्तव्य पालन करना सिखाया।

स्वामी जी लेखक के रूप में :– स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने कई धार्मिक व समाजिक पुस्तकें लिखी। प्रारम्भ में संस्कृत में लिखी। उसके बाद में हिन्दी में लिखने लगे। हिन्दी को आर्य भाषा घोषित किया गया। उत्तम लेखन के लिए आर्य भाषा का प्रयोग करने वाले स्वामी जी अग्रणी व प्रारम्भिक व्यक्ति थे। स्वामी जी ने अनेकों ग्रन्थ लिखे और चारों वेदों का सरल भाषा में अनुवाद किया। जिनका वर्णन निम्न प्रकार से हैः–

सत्यार्थ प्रकाश ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद विषय सूची।

सन् 1881 ईं. में गोकरूणानिधि नामक पुस्तक प्रकाशित की, जो कि गोरक्षा आन्दोलन को स्थापित करने में बहुत सहायक सिद्ध हुई।

आर्यों देश्यरनमाला, व्यवहारभानू, स्वीकारपतर।

संस्कृत वाक्य प्रबोधः– यह संस्कृत सिखाने वाली पुस्तिका है।

मृत्युः– स्वामी जी की मृत्यु 10 अक्तूबर 1883 ईं. में दीपावली के दिन संध्या के समय हुई। उन दिनों वे जोधपुर महाराजा श्री जसवन्त सिंह के निमन्त्रण पर गए हुए थे क्योंकि महाराजा जसवंत सिंह उनके चरणों में बैठ कर स्वामी जी के प्रवचन सुनते थे। वहां धर्म के ठेकेदार पाखण्डी ब्राह्ममणों के षड़यन्त्र के शिकार हुए, उनको भोजन में विष दे दिया गया। उसके बाद जोधपुर अस्पताल में जहर से ही मृत्यु हुई।

सामाजिक क्रांति के प्रतीक छोटूराम

– बी.एस. गिल, सचिव
जाट सभा (मो० 9888004417)

प्रायः महापुरुषों के जीवन को मोड़ देने का श्रेय घटनाओं को होता है। छोटूराम का जन्म एक सामान्य कृषक परिवार में हुआ। उनके पिता उनको अच्छी शिक्षा देना चाहते थे, परंतु पैसे का अभाव था। उनके पिताजी व छोटूराम साहूकार के पास पैसे लेने के लिए घर पहुंचे। लालाजी ने छोटूराम के पिता को अपना पंखा खींचने का आदेश दिया। इस पर बालक, किंतु स्वाभिमानी व संस्कारी, छोटूराम की आत्मा को तिलमिला दिया और साहूकार को कहा कि तुम्हें लज्जा नहीं आती कि अपने लड़के के बैठे हुए भी तुम पंखा खींचने के लिए उससे ना कह कर मेरे बूढ़े पिता से पंखा खिंचवाते हो। इस घटना ने उनके जीवन की दिशा व सोच को ही बदल डाला। उन्होंने कृषक व मजदूरों के शोषण एवं उत्पीड़न को समाप्त करने का संकल्प लिया।

उन्होंने कड़ी मेहनत कर अव्वल नंबर लेकर उच्च शिक्षा प्राप्त की। कानून की डिग्री लेने के पश्चात आगरा में वकालत शुरू की। अपने जीवन निर्वाह व उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ट्यूशन व प्राइवेट नौकरी भी की। सन 1916 में रोहतक कोर्ट में वकालत शुरू की। वकीलों का व्यवहार मुवक्किलों के प्रति अच्छा नहीं था। उनको कुर्सी व मूढ़ों पर बैठने की इजाजत नहीं थी। उन्होंने इस परंपरा का विरोध ही नहीं बल्कि अपने चेंबर में कुर्सी वह मूढ़ों का प्रबंध भी किया। उन्होंने वकालत के साथ–साथ आम जनता की सामाजिक व आर्थिक समस्याओं को सुना ही नहीं बल्कि उनके समाधान के लिए संघर्ष करना शुरू कर दिया। स्वतन्त्रता संघर्ष में भी भाग लेना आरंभ कर दिया तथा 1916 में उनको रोहतक जिले का कांग्रेस का प्रधान भी बनाया गया।

महात्मा गांधी ने प्रथम विश्वयुद्ध में अंग्रेजों का समर्थन किया और देशवासियों को फौज में भर्ती होने की अपील भी की। इन्हीं का अनुसरण करते हुए छोटूराम ने पंजाब में लगभग 26 हजार नौजवानों को ब्रिटिश फौज में भर्ती कराने का काम किया। ब्रिटिश सरकार ने महात्मा गांधी की सामाजिक सेवाओं को देखते हुए वर्ष 1915 में केसर–ए–हिंद के खिताब से नवाजा। प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति पर कांग्रेस के नेताओं को निराशा हाथ लगी। 1920 में महात्मा गांधी ने रोलेट एक्ट के विरोध में असहयोग आंदोलन का बिगुल बजा दिया। कांग्रेस के कई महान नेताओं जैसे सी.आर. दास, एनी बेसेंट, तिलक, डॉक्टर सप्रू, डॉ सत्यपाल, मदन मोहन

मालवीय ने अपनी असहमति जताई। कुछ अन्य नेताओं जैसे रविंद्र नाथ टैगोर, डॉ. अंबेडकर तथा मोहम्मद अली जिन्ना ने भी इसका विरोध किया। हिंदू सभा तथा जस्टिस पार्टी मद्रास ने भी इसका विरोध किया। इन सभी नेताओं, पार्टियों व संगठनों का मत था कि इस आंदोलन में हर वर्ग व मत के लोग शामिल होंगे तो उनसे यह उम्मीद रखना कि असहयोग आंदोलन अहिंसात्मक रहेगा, एक मिथ्या और गलत उम्मीद है। नेताओं का विचार था कि यदि असहयोग आंदोलन हिंसक हो गया तो, इसके परिणाम की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया गया। 1920 में रोहतक कांग्रेस अधिवेशन में छोटूराम ने असहयोग आंदोलन का विरोध किया। उनका कहना था कि स्वराज्य केवल अहसहयोग या जंग से नहीं प्राप्त किया जा सकता, बल्कि संवैधानिक तथा नीतिगत मार्ग भी स्वराज्य प्राप्ति का साधन हो सकता है। असहयोग आंदोलन के दौरान सरकारी स्कूलों का बहिष्कार उचित नहीं है। तत्कालीन पंजाब में निजी व सरकारी स्कूल नाम मात्र ही थे। देश में जिन किसानों ने असहयोग आंदोलन में भाग लिया उनकी फसलों को जला दिया गया। अतः छोटूराम ने इन सभी कारणों को ध्यान में रखते हुए असहयोग आंदोलन का विरोध किया तथा कांग्रेस से भी अलविदा कह दिया। छोटूराम का गांधीजी से मतभेद थे न कि मन भेद।

छोटूराम ने अपना राजनीतिक सफर ब्रिटिश भारत पंजाब विधान परिषद का सदस्य बनकर किया। उन्होंने 1921 से जनवरी 1945 तक पंजाब विधान परिषद का सदस्य बनकर शिक्षा व ग्रामीण, खेती व राजस्व मंत्री के रूप में सेवाएं दी। उनका स्वतंत्रता, समानता तथा न्याय में अटूट विश्वास था। वे सत्ता को सुख भोगने के लिए नहीं बल्कि आम जनता के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक उत्थान का माध्यम समझते थे। चौधरी छोटूराम ने इस दिशा में पंजाब में कई कानून बनवाए। पंजाब रहन पुण्य प्राप्ति कानून, पंजाब ऋणी राहत कानून, पंजाब क्रिमिनल संशोधन बिल, मनी लेंडर्स रजिस्ट्रेशन कानून तथा एग्रीकल्चर प्रोडक्शन मार्केटिंग कानून इत्यादि। इन कानूनों का मुख्य उद्देश्य था कि किस प्रकार किसानों, मजदूरों व नौजवानों को कर्जा मुक्त जीवन मिले तथा उनका सामाजिक व आर्थिक विकास हो। खेती के उत्पादन को बढ़ाने के लिए उन्होंने पुरानी नहरों की साफ–सफाई तथा नई नहरों का निर्माण करवाया। भाखड़ा डैम का ब्लूप्रिंट भी तैयार किया। छोटूराम ने सामाजिक बुराइयों दहेज प्रथा, बाल विवाह, बहु विवाह, अनियंत्रित जनसंख्या, सांप्रदायिकता, अंधविश्वास, निरक्षरता, नैतिक मूल्यों की कमी, छुआछूत व जाति भेदभाव के खिलाफ कई जन आंदोलन भी किए। वह लैंगिक न्याय, समानता और पुनर्विवाह के कट्टर समर्थक थे। छोटूराम की 2 बेटियां थी। उनको अच्छी शिक्षा दी तथा समाज को संदेश दिया कि लड़का लड़की में कोई अंतर नहीं है।

कुछ विचारकों ने छोटूराम की राष्ट्रीयता व देशभक्ति पर संदेह व्यक्त किया है। छोटूराम के सभी भाषणों व कानूनों का विश्लेषण किया जाए तो उनमें कोई भी ऐसी बात नहीं मिलती जो हिंदुस्तान के स्वराज्य के खिलाफ हो। छोटूराम की देशभक्ति का इससे बड़ा सबूत क्या हो सकता है कि उन्होंने मोहम्मद अली जिन्ना की पार्टी मुस्लिम लीग को संयुक्त पंजाब की राजनीति में दखल नहीं होने दिया तथा उनकी मृत्यु तक मुस्लिम लीग केवल एक या दो विधायक ही विधान परिषद में भेज पाई, जबकि संयुक्त पंजाब में मुसलमानों की आबादी हिंदुओं से काफी ज्यादा थी। उनकी मृत्यु के बाद 1946 में पंजाब विधान परिषद का इलेक्शन हुआ तथा मुस्लिम लीग सबसे ज्यादा सीट जीतने में कामयाब हुई, परंतु उनकी यूनियनिस्ट पार्टी ने कांग्रेस व अकाली दल से समझौता कर गठबंधन सरकार बनाई, परंतु जिन्ना ने ब्रिटिश सरकार से मिलकर गठबंधन सरकार को तुड़वा दिया तथा पंजाब विधान परिषद में पंजाब को दो भागों में बांटने का प्रस्ताव पास करवा दिया। इस बंटवारे से हजारों लोगों का नरसंहार हुआ। राजनीतिक चिंतकों का मत है कि यदि छोटूराम जिंदा होते तो पंजाब का बंटवारा न होता। छोटूराम ने आज से 100 वर्ष पहले ऐसी सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था की कल्पना की थी कि गांव व शहर के आर्थिक अंतर कम हो, धर्म का राजनीति में दखल न होना, फसलों का उचित दाम मिलना, सामाजिक भाईचारा मजबूत हो, छुआछूत की समाप्ति तथा शिक्षा का अधिकार सभी देशवासियों को मिलना, आज की वर्तमान राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों में छोटूराम की सोच प्रासंगिक है।

सन्त शिरोमणि गुरु रविदासजी

– लक्ष्मण सिंह फौगाट
(मो० 6280830760)

गुरु रविदास जी मध्यकाल में एक भारतीय संत कवि सतगुरु थे। इन्हें संत शिरोमणि संत गुरु की उपाधि दी गई है। इन्होंने रविदासीया, पंथ की स्थापना की और इनके रचे गए कुछ भजन सिख लोगों के पवित्र ग्रंथ गुरुग्रंथ साहिब में भी शामिल हैं। इन्होंने जात पात का घोर खंडन किया और आत्मज्ञान का मार्ग दिखाया। इन्होंने सन्त शिरोमणि रहे सतगुरू सन्त कबीरदास की वाणी का ही समर्थन किया है। वे सन्त कबीरदास को ही अपना गुरू मानते थे।

ग्रन्थों में जो भी जानकारी लिखी गई है इसके विपरीत कुछ जगह पर संत रविदास जी की जयंती पर कुछ गलत बातें बताई जा रही है कहा जा रहा है कि संत रविदास जी की वाणी को विशेष जाति ब्राह्मण के द्वारा कह गए शब्दों को गलत तरीके से बात कर पेश किया जा रह है जो बहुत ही सोचने वाली बात है। इस नई पीढ़ी के लिए जो अज्ञानता के उस ओर चल पड़ा हैं सच्चाई को बिना जाने न जाने की कोशिश कर रहे हैं सुनी सुनाई बातों को सुनकर लड़ाई झगड़ा पर उतारू हो चले हैं आज का समाज विभिन्न सोचो से उत्पन्न होकर एक विशेष सोच बना रहा है जो ही खराब भाषा का प्रयोग कर विशेष समुदाय को भड़काकर उसे जाति के और उकसाना और सामाजिक विशेषताओं की बंधन से मुक्त कर आपस में भेदभाव कर रहा है। आप लोग अच्छे से अच्छे संत रविदास जी की वाणी को सबके पास पहुंचाया है। जो उनका सही विचार था अन्यथा गांव में तो बहुत ही बुरा हाल है लोग यह समझ बैठे हैं कि संत रविदास केवल विशेष जाति के ही विशेष बनकर रह गए हैं। ब्राह्मणों ने अभद्र व्यवहार जैसे किया हो ऐसी इनकी परिकल्पना कर कुछ और सामाजिक व्यक्तियों द्वारा बखान कर समाज को बताया जा रहा है कृपया इसे बदलने की और सही बातों को बताना जरूरी है नहीं तो आने वाले भ्रविष्य में बहुत ही बड़ा विद्रोह खड़ा हो सकता है।

जबकि रविदास तो एक सन्त शिरोमणि थे उनकी भक्त तो मीरा मेवाड़ की रानी व राजा पिपा भी थे। यानी कि वे सभी धर्म व जातियों से वे कहीं ऊपर पहुंचे हुए थे। गुरू रविदास जी(रैदास) का जन्म काशी में माघ पूर्णिमा दिन रविवार को संवत 1433 को हुआ था उनका एक दोहा प्रचलित है। चौदह सौ तैंतीस कि माघ सुदी पन्दरास, दुखियों के कल्याण हित प्रगटे श्री गुरु रविदास जी। उनके पिता का संतोख दास तथा माता का नाम कलसां देवी था। उनकी पत्नी का नाम लोना देवी बताया जाता है। रैदास ने साधु–सन्तों की संगति से पर्याप्त ज्ञान प्राप्त किया था। रविदास चमार जाति में जन्में और जूते बनाने का काम किया करते थे और ये उनका व्यवसाय था और अपना काम पूरी लगन तथा परिश्रम से करते थे और समय से काम को पूरा करने पर बहुत ध्यान देते थे। कई लोगों का मानना है कि संत रविदास जी का कोई गुरु नहीं था। कहा जाता है लेकिन रविदास अपेक्षा सन्त शिरोमणि कबीर दास को अपना सतगुरू मानते थे फिर भी भारत की प्राचीन गौरवमयी बोद्ध परंपरा के अनुयायी भी थे। इन्होंने ब्राह्मणी धर्म में व्याप्त कुरीतियों और अज्ञानता के लिए आम जनमानस को धार्मिक अंधविश्वास और आडंबर से दूर रहने का संदेश दिया और कहा कि अगर मन पवित्र है तो गंगा में भी स्नान की आवश्यकता नहीं है। **"मन चंगा तो कठौती में गंगा"** इनकी प्रसिद्ध उक्ति है जो इस बात पर प्रकाश डालती है। यहां एक प्रसिद्ध कहावत है कि उनका एक भगत गंगा नहाने के लिये जा रहा था रैदास ने भी कुछ रुपये दिये और कहा कि गंगा के हाथ में देना। यह करके गंगा गंगा स्नान करने लगा तो वो भगत गंगा स्नान के बाद प्रार्थना करने लगा कि सन्त रैदास ने आपके लिये भेंट भेजी है उसको स्वीकार करो गंगा मां ने हाथ निकालकर भेंट स्वीकार कर ली और दूसरे हाथ से एक नौरत्न कंगन रविदास को देने के लिए भक्त को गंगा ने दिया जो बहुत ही आकर्षक व सुन्दर था। भक्त के मन में लालच आ गया कि इस कंगन के बारे में रविदास को क्या पता। इस कंगन को मैं राजा को दूंगा तो राजा मुझे माला माल कर देगा और भक्त ने वो कंगन राजा को दे दिया। राजा ने वहीं कंगन महारानी को दे दिया जो महारानी के मन को भा गया। उस राजा से ऐसा ही दूसरा कंगन मांग लिया। राजा ने उसी भक्त को दरबार में बुलाया और दुसरा कंगन लाने को कहा तो भक्त बहुतभयभीत हो गया और सोचने लगा कि अब मैं दूसरा कंगन कहा से लाऊं। अब भक्त दो दिन–रात सोच में पडा रहा आखिर में सन्त गुरू रविदास के चरणों में जा गिरा और अपनी समस्या उनके सामने रखी। सन्त दयालू होते है उसे माफ करते हुये रविदास ने कुण्ड से दूसरा कंगन निकाला और भक्त को भविष्य में ऐसा ना करने की सलाह देने के बाद दे दिया। एक और कहावत है कि उनकी भक्त मेवाड़ की महारानी मीरा बाई तो उनसे

मिलने और जब प्रवचन सुनने आई तो एक करोड़ रुपये का हिरा लेकर आई जो सतगुरू को दे दिया तब सतगुरू रविदास ने कहा बेटी मेरा गुजारा मेरे द्वारा जुतिया बनाने के काम करने से चल जाता है, मुझे कुछ नहीं चाहियें, मेरे लिये यह हिरा पत्थर के समान है इसलिये इसको आप अपने साथ ही ले जाओं। तब महारानी मीरा के दिल में सतगुरू रविदास की इज्जत और भी बढ़ गई। ऐसे होते है सन्त जो लेते नहीं देते ही हैं।

इस्लाम धर्म में फैली बुराइयों को भी इन्होंने समान रूप से अपनी अभिव्यक्ति में शामिल किया था। समयानुपालन की प्रवृति तथा मधुर व्यवहार के कारण उनके सम्पर्क में आने वाले लोग भी बहुत प्रसन्न रहते थे। प्रारम्भ से ही रविदास जी बहुत परोपकारी तथा दयालु थे और दूसरों की सहायता करना उनका स्वभाव बन गया था। साधु–सन्तों की सहायता करने में उनको विशेष आनन्द मिलता था। वे उन्हें प्रायः मूल्य लिये बिना जूते भेंट कर दिया करते थे। उनके स्वभाव के कारण उनके माता–पिता उनसे अप्रसन्न रहते थे। कुछ समय बाद उन्होंने रविदास तथा उनकी पत्नी को अपने घर से निकाल दिया। रविदास पड़ोस में ही अपने लिए एक अलग इमारत बनाकर तत्परता से अपने व्यवसाय का काम करते थे और शेष समय ईश्वर–भजन तथा साधु–सन्तों के संगत में व्यतीत करते थे। सुप्रसिद्ध युवा कवि गोलेन्द्र पटेल ने अपनी कविता 'कठौती और करघा' में काशी के संदर्भ में कहा है कि

"रैदास की कठौती और कबीर के करघे के बीच, तुलसी का दुख एक सेतु की तरह है, जिस पर से गुजरने पर, हमें प्रसाद, प्रेमचंद व धूमिल आदि के दर्शन होते हैं!

यह काशी/बेगमपुरा, अमरदेसवा और रामराज्य की नाभि है।" (कवितांश : 'कठौती और करघा' से)

उनके जीवन की छोटी–छोटी घटनाओं से समय तथा वचन के पालन सम्बन्धी उनके गुणों का पता चलता है। एक बार एक पर्व के अवसर पर पड़ोस के लोग गंगा–स्नान के लिए जा रहे थे। रैदास के शिष्यों में से एक ने उनसे भी चलने का आग्रह किया तो वे बोले, गंगा–स्नान के लिए मैं अवश्य चलता किन्तु गंगा स्नान के लिए जाने पर मन यहाँ लगा रहेगा तो पुण्य कैसे प्राप्त होगा? मन जो काम करने के लिए अन्तःकरण से तैयार हो वही काम करना उचित है। मन सही है तो इसे कठौते के जल में ही गंगास्नान का पुण्य प्राप्त हो सकता है। कहा जाता है कि इस प्रकार के व्यवहार के बाद से ही कहावत प्रचलित हो गयी कि – मन चंगा तो कठौती में गंगा।

रैदास ने ऊँच–नीच की भावना तथा ईश्वर–भक्ति के नाम पर किये जाने वाले विवाद को सारहीन तथा निरर्थक बताया और सबको परस्पर मिलजुल कर प्रेमपूर्वक रहने का उपदेश दिया।

वे स्वयं मधुर तथा भक्तिपूर्ण भजनों की रचना करते थे और उन्हें भाव–विभोर होकर सुनाते थे। उनका विश्वास था कि राम, कृष्ण, करीम, राघव आदि सब एक ही परमेश्वर के विविध नाम हैं। वेद, कुरान, पुराण आदि ग्रन्थों में एक ही परमेश्वर का गुणगान किया गया है।

कृन्स, करीम, राम, हरि, राघव, जब लग एक न पेखा।
वेद कतेब कुरान, पुरानन, सहज एक नहिं देखा।।
चारो वेद के करे खंडौती। जन रैदास करे दंडौती।।

उनका विश्वास था कि ईश्वर की भक्ति के लिए सदाचार, परहित–भावना तथा सद्व्यवहार का पालन करना अत्यावश्यक है। अभिमान त्याग कर दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करने और विनम्रता तथा शिष्टता के गुणों का विकास करने पर उन्होंने बहुत बल दिया। अपने एक भजन में उन्होंने कहा है–

कह रैदास तेरी भगति दूरि है, भाग बड़े सो पावै।
तजि अभिमान मेटि आपा पर, पिपिलक हवै चुनि खावै।।

उनके विचारों का आशय यही है कि ईश्वर की भक्ति बड़े भाग्य से प्राप्त होती है। अभिमान शून्य रहकर काम करने वाला व्यक्ति ही जीवन में सफल रहता है जैसे कि विशालकाय हाथी शक्कर के कणों को चुनने में असमर्थ रहता है जबकि लघु शरीर की पिपीलिका (चींटी) इन कणों को सरलतापूर्वक चुन लेती है। इसी प्रकार अभिमान तथा बड़प्पन का भाव त्याग कर विनम्रतापूर्वक आचरण करने वाला मनुष्य ही ईश्वर का भक्त हो सकता है।

रैदास की वाणी भक्ति की सच्ची भावना, समाज के व्यापक हित की कामना तथा मानव प्रेम से ओत–प्रोत होती थी। इसलिए उसका श्रोताओं के मन पर गहरा प्रभाव पड़ता था। उनके भजनों तथा उपदेशों से लोगों को ऐसी शिक्षा मिलती थी जिससे उनकी शंकाओं का सन्तोषजनक समाधान हो जाता था और लोग स्वतः उनके अनुयायी बन जाते थे।

उनकी वाणी का इतना व्यापक प्रभाव पड़ा कि समाज के सभी वर्गों के लोग उनके प्रति श्रद्धालु बन गये। कहा जाता है कि मीराबाई उनकी भक्ति–भावना से बहुत प्रभावित हुईं और उनकी शिष्या बन गयी थीं।

वर्णाश्रम अभिमान तजि, पद रज बंदहिजासु की।

सन्देह–ग्रन्थि खण्डन–निपन, बानि विमुल रैदास की।।

आज भी सन्त रैदास के उपदेश समाज के कल्याण तथा उत्थान के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने अपने आचरण तथा व्यवहार से यह प्रमाणित कर दिया है कि मनुष्य अपने जन्म तथा व्यवसाय के आधार पर महान नहीं होता है। विचारों की श्रेष्ठता, समाज के हित की भावना से प्रेरित कार्य तथा सद्व्यवहार जैसे गुण ही मनुष्य को महान बनाने में सहायक होते हैं। इन्हीं गुणों के कारण सन्त रैदास को अपने समय के समाज में अत्यधिक सम्मान मिला और इसी कारण आज भी लोग इन्हें श्रद्धापूर्वक याद करते हैं।

रैदास के 40 पद गुरु ग्रन्थ साहब में मिलते हैं जिसका सम्पादन गुरु अर्जुन साहिब ने 16 वीं सदी में किया था। सतगुरू रविदास की जयंती पर उनके चरणों में बार–बार नमन् करते है।

बुजुर्गों में हृदय वाल्व खराब होने का इलाज बिना सर्जरी से किया जा सकता है

– डॉ. एच.के. बाली

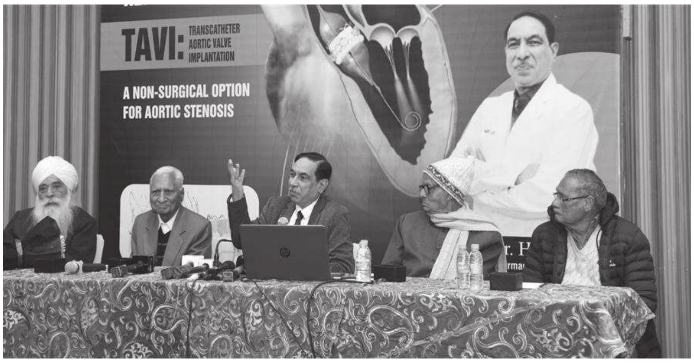

इंसान के हृदय में चार वाल्व होते हैं जो खून के बहाव को कंट्रोल करते हैं, पर कई बार ठीक तरीके से खुल व बंद नहीं हो पाते, जिसके कारण हृदय शरीर के अंगों तक पर्याप्त खून नहीं पहुंचा पाता है जोकी जानलेवा हो सकता है, इस गंभीर रोग को एओर्टिक स्टेनोसिस कहते हैं ।

एओर्टिक स्टेनोसिस से ग्रस्त पंचकूला निवासी 87 वर्षीय तारा चंद (बदला हुआ नाम) वर्ष 2024 में गंभीर स्थिति में अस्पताल पहुंचा, बचने की उम्मीद कम थी, उम्र ज्यादा होने के साथ साथ अन्य गंभीर बीमारियों के कारण हार्ट सर्जरी संभव नहीं थी । डॉ बाली ने उनके हृदय के एओर्टिक वाल्व रिप्लेसमेंट के लिए गैर–सर्जिकल प्रक्रिया टीएवीआर का उपयोग करते हुए इलाज कर दिया और आज वे हमारे बीच में स्वस्थ जीवन जी रहे हैं।

टीएवीआर – ट्रांसकेथेटर एओर्टिक वाल्व रिप्लेसमेंट के माध्यम से ठीक हो चुके 70 से 85 साल के हृदय रोगियों की उपस्थिति में इस गैर–सर्जिकल प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी देते हुए कार्डियक साइंसेज लिवासा ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के अध्यक्ष डॉ. एच.के. बाली ने कहा यह मिनिमल इनवेसिव प्रक्रिया है और जिसके तहत बिना ओपन हार्ट सर्जरी के पुराने (खराब), क्षतिग्रस्त वाल्व को हटाए बिना एक नया वाल्व रोगग्रस्त वाल्व के अंदर रखा गया है।

टीएवीआर सफल उपचार प्रक्रिया इसलिए भी है क्यूंकी एओर्टिक स्टेनोसिस मुख्य रूप से बुजुर्ग रोगियों में ज्यादा पाया जाता है और अक्सर ये किडनी यां फेफड़े यां शुगर, आदि गंभीर बीमारियों से ग्रस्त होते हैं यां पहले ही वाल्व डलवा चुके होते है इसलिए उनमें ओपन हार्ट सर्जरी के माध्यम से सर्जिकल वाल्व डालना खतरे से खाली नहीं होता।

शुरू में, टीएवीआर केवल उन रोगियों में किया गया था जिनमे ओपन हार्ट सर्जरी से वाल्व डालना उनकी जान के लिए खतरनाक था। डॉ. बाली ने कहा कि बढ़ते अनुभव और बेहतर वाल्वों की उपलब्धता के साथ, अब एओर्टिक स्टेनोसिस से ग्रस्त बुजुर्ग रोगियों के इलाज के लिए टीएवीआर को प्राथमिकता दी जा रही है।

पिछले कुछ सालों में 50 से अधिक बजुर्गों का टीएवीआर के माध्यम से इलाज कर चुके डॉ. बाली ने कहा कि भारत में एओर्टिक स्टेनोसिस लगातार बढ़ रहा है विशेष रूप से बुजुर्ग लोगों में। 80 वर्ष से अधिक आयु के दो प्रतिशत लोगों और 90 वर्ष से अधिक आयु के चार प्रतिशत लोगों में यह पाया जाता है। ऐसी स्थितियों में टीएवीआर प्रभावी और सुरक्षित विकल्प के रूप में उभरा है जिसकी पूरी प्रक्रिया कुछ घंटों में समाप्त हो जाती है। रोगी को अगले दिन एम्बुलेटरी किया जाता है और 2 या 3 दिनों में छुट्टी दे दी जाती है।

मेरी दीनबंधु के प्रति सर्मपणता व मेरी पीड़ा

– सूरजभान दहिया (मो० 9818120950)

9 जनवरी–2025 को मैं रोहतक में था, इसदिन मैं जरूर रोहतक में होता हूं। रोहतक में किसान मसीहा चौधरी छोटूराम की समाधी है। वे9 जनवरी 1945 को लाहौर में परलोक सिधार गये थे मैने उन्हें उनकी समाधी पर जाकर स्मरण किया, नमन किया, श्रृद्धा सुमन अर्पित किये। न जाने कितने ख्यालो के साथ समाधी स्थल से मैं रुकसत हुआ। अचानक मैने अपने पीछे एक सज्जन को आते देखा, वह मेरी तरफ ही बढरहा था। मेरे पास आकर उन्होंने मुझ से पूछा "आप चौधरी छोटूराम को श्रृद्धाजंली देने के पश्चात् क्या अनुभव कर रहे हो ?" मैने उनकी ओर देखा और अपने भाव व्यक्त कर दिये– "न राजनीतिक छोटूराम बनने को संकल्पित है, न कोई युवक भगतसिह बनने को संकल्पित है, न कोई महिला रानी तोमरस दहिया बनने को संकल्पित है, बस हम साधारण जीवन व्यतीत कर रहे हैं और साधारण ही बने रहेगे।" उन्होंने फिर एक प्रश्न और मुझ से पूछ लिया। "आपने चौधरी होटूराम का कितना अध्ययन किया है ?" मैने सहज से कह डाला–"जनाब, छोटूराम का अध्ययन नहीं होता उसका पाठ होता है और मैं बरसो से नित्य उनका पाठ करता हूं। मैं लोगों से सुनता हूँ कि वे गीता का पाठ करते हैं, अति गहन है, बार–बार पाठ करने के पश्चात् भी गीता सार राममना कठिन है। ऐसा ही हाल मेरा है। मैं भी किसान गीता (छोटूवाद) का पाठ करता हूं, परंतु मुझे भी किसान गीता समझने में काफी कठिनाई हो रही है। फिर मैने उनका परिचय जानना चाहा। उन्होंने मुझे बताया– "वे महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में प्रोफसर है, तथा वे कई वर्षों से निरन्तर चौधरी की समाधी पर 9 जनवरी को आते हैं। फिर उन्होंने अपने अनुभव मुझसे सांझे किये। मै हरियाणा से नहीं हूँ और न ही मैं किसान समाज से आता हूँ। जब से मैं यहां आया हूँ तो मैने अनुभव किया है कि चौधरी छोटूराम का यहाँ सबसे ज्यादा उच्चारण होता है। सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि यहाँ के राजनीतिक भले ही अपनी राजनीति में सक्रियता लाने हेतु चौधरी छोटूराम का नाम लेते हो। परन्तु उनके प्रति वे जरा भी समर्पित नहीं है। मैने 9 जनवरी को सालो सालसे बहुत कम राजनेताओं का छोटूरामकी समाधी पर आते देखा है। मैंने जबसे चौधरी छोटूराम के जीवन को पढ़ना शुरु किया है, मेरी उनकी प्रति समपर्णता बढी है। उन्होंने मुझ से निरन्तर सम्पर्क रखने का आश्वासन दिया और जयछोटूराम से विदाई की।

जाने से पूर्व प्रोफसर साहब ने एक बात और मुझसे कही–"दहिया जी। सॉपला के घांसीराम ने जब छोटूराम के आठवी जमात के बाद लाला ने छोटूरा के पिता को पढ़ने की बजाय पटवारी बनने की सलाह दीथी तो बालक छोटूराम ने तपाक से जवाब दिया था

"लालाजी। मैं पटवारी बनने के लिये थोड़ा पैदा हुआ हूं, मै तो पटवारी बनाने के लिये पैदा हुआ हूं। लालाजी यह बात सुनकर छोटूराम के पिताजी से बोले "सुखी! तेरा छोरा तै, अनहोनी कहग्या।" छोटूराम फिर बोल्या –"लालाजी! याद राखणा, तेरी सलाह, अर मेरी बात इतिहास बनेगी।" फिर अन्त में प्रोफसर साहब ने आजके सन्दर्भ में एक टिप्पणी भी की "जब डा० रामधारी सिंह दिनकर को सांसद नामित किया गया और वे दिल्ली आये तोउन्होने चेताया था – जिस चकाचौंध और रईसी से नई दिल्ली रह रही है, यदि उसे गाँव का सादा किसान समझ जाये तो वह आकर रायसीना हिल को हिला देगा। पर आज ऐसा नही हो पारहाहै क्यो वहाँ अब छोटूराम नहीं रहता। दहिया जी!आपने जो पीडा वक्त की है, उसमे सत्यता है।"

एम० एस० पी० देने के लिये किसान आन्दोलन चला था, अब फिर डालेवाल जी एम० एस० पी० लेने के लिये आमरण अनशन पर है। सरकार इसपर संवेदनशील नहीं दिखती। दूसरा विश्वयुद्ध चल रहा था। 1943 मे लार्ड वेवल भारत के वायसराय थे। उन्होंने फूड मिनस्टर कान्फ्रेंस में गेहू का सर्मथन मूल्य 6 रुपये मण निर्धारित करदिया। चौधरी छोटूरामने उस कान्फ्रेंस में एलान कर दिया–"मैं अपने किसान का गेहूं 6 रुपये मण पर नही बेचूगां – यह घाटे का सौदा है। वायसराय आग बबूला हो गये। आज तक वायसराय के सामने किसी की हिम्मत नही हुई थी कि कोई उनके आदेशों को न माने। चौधरी छोटूराम तो यह कहते कान्फ्रेंस से वाकआऊट ही करगये थे– "किसान अपनी फसलके मालिक है, मूल्य वह निर्धारित करेगा। यदि सरकार जोर जर्बदस्ती करेगी तो पलवल से लेकर पेशावर तक का किसान

अपनी गेहू की फसल को आग लगा देगा, पर ब्रिटिश सरकार को 6 रुपये मण पर गेंहू नहीं देगा। आखिरकार छोटूराम के इस दृढ़ संकल्प के आगे सरकार ने 11 रुपये मण की दर पर गेहूं खरीदना पड़ा। ब्रिटिश सरकार दूसरे युद्ध में खाद्य सामग्री व सैन्य बल के मामले में पंजाब यानी चौधरी छोटूराम पर आश्रित थी।

आज किसान विवशता ग्रस्त है मुझे दुविधा में डाल रखा है। एक पटवारी ने हल चलाते हुये किसान से पूछा –"चौधरी! एक साल में क्या बच जाता है?" किसान बोला– "चौधरी बचना क्या ? खर्चा–वर्चा काट के 'चौधर' ही बचती है।" पर मुझे तो चौधर भी बचती नहीं दिखती। पहले किसान पुरोहित हुआ करता था। अब उसने ओरो को पुरोहित स्वीकार कर लिया है। मुझे आज जटवाडे में चलती–फिरती लाशे नजर आती हैं। भला किसान क्यो नहीं अपनी फसलो का वाजिब समर्थन मूल्य मांगे। उसे खुद अपने फसल को बेचने का मूल्य निर्धारित करने हेतु सक्षम होना पड़ेगा। चौधरी छोटूराम के समझाने से हमने बोलना सीख लिया और दुश्मन को भी पहचान लिया, पर, उन्होने यह भी कहा था कि अपनो की टांग खिंचने के बजायें उनके हाथ खींचो, भाईचारा सुदृढ़ करो। किसान भाईचारे की शक्ति के आगे कोई नही टिक सकता।"

विवश व हताश किसान को संभलने हेतू चौधरी छोटूराम ने अपनी पुस्तक 'बेचारा किसान'में भरसक प्रयास किये। इसके अतिरिक्त उन्होंने रोहतक से एक साप्ताहिक अखबार **'जाट गजट'** भी प्रकाशित किया, जो गाँव–गाँव में हुक्को की बैठको में किसानों के लिए प्रेरक शक्ति बनी। यदि हम चौधरी छोटूराम की किसान के प्रति सर्मपणता की समीक्षा करे तो लाहौर से प्रकाशित **'द ट्रिब्यून'** के पत्रकार की यह टिप्पणी उल्लेखित की जा सकती है– "चौधरी छोटूराम का आज हो, कल हो या परसो – सब एक जैसे होते थे– वे केवल और केवल किसान के मुद्दो की एक ही दिनचर्या में रहते थे। चौधरी छोटूराम की विचारधारा पर प्रथम प्रकाशन अंग्रेजी मे **'छोटूरामः द नेशनल यूनियनिस्ट पार्टी'**, लाहौर मे 1932 में आया। 1920 से लेकर 1945 तक लगभग 25 वर्षों तक उन्होने पंजाब के कृषक–श्रमिक वर्ग के उत्थान के लिये पंजाब की राजनीति में हलचल मचाये रखी। न स्वयं चैन ली और न सहयोगियो अथवा विरोधियो को चैन लेने दी। वे शोषित–दलित वर्ग के उद्धारक के रूप में प्रतिष्ठित हो गये थे। उनके जीवन पर प्रथम पुस्तक **'दीनबन्धु चौधरी छोटूराम'** रघुवीर सिंह शास्त्री ने 1965 में लिखी तथा उनके व्यक्तित्व पर प्रथम शोध कार्य डा० भलेराम मलिक ने अपनी पी०एच०डी० डिग्री हेतु कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में 1968 में प्रस्तुत किया था। तत्पश्चात मेरे जैसे सैकड़ो लोगो ने उन पर पुस्तके लिखी हैं तथा न जाने कितने छात्रोने उनके दर्शन व कार्यों पर पी०एच०डी० हासिल कर ली है। मैं तो केवल एक वाक्य अपनी पुस्तक से यहाँ लिखुगा, "Deenbandhu Chhotu Ram was The Peasant leader par excellence without a second in the entire Peasant History."

चौधरी छोटूराम तप–तप कर 31 वर्ष की आयु में 'कुन्दन' बनकर 1912 में अपने कुरुक्षेत्र–रोहतक में किसान महाभारत फतह करने हेतु आये –स्वयं कृष्ण स्वयं अर्जुन और उनके सामने सैकड़ों किसान लूटेरे। उस कुन्दन में विवेक की तपस थी, और इस विवेक के बलपर किसान महाभारत जीतने की तपस थी और इस विवेक के बल पर किसान महाभारत जीतने की ठाणी। किसान शत्रुओ की रणनीति समझी–वक्त लगा, अपनी दक्षता द्वारा यूनियनिस्ट सैन्य चक्रव्यूह 1923 में रचा और 1924 में पंजाब में मंत्री के रूप आकर किसान महाभारत युद्ध का बिगूल बजा दिया, यह युद्ध 18 दिन नही 20 बरस चला। क्योकि उन्हें पता था युद्ध लम्बा चलेगा, अतएव अपने सैन्य संगठन को मजबूत करने की प्रक्रिया साथ साथ जारी रखी।

ग्रामीण परिवेश से उन्होंने किसान – खेती हर शक्ति को शिक्षा द्वारा पैना करने की कारगर नीति अपनाई। उन्होंने इस प्रयोजन हेतु एक ही लक्ष्य –"शोषित वर्ग, किसान व अनुसूचित जातियों का उत्थान" के अन्तर्गत भीमराव अम्बेदकर से घनिष्टता बनाई। वे अपनी मंत्रीपद के वेतन से गरीब छात्रों को छात्रवृति देते थे। उनका ज्यादातर वेतन इसी में चला जाता था। एक बार उनके सामने खर्रर गांव सभा में एक होनहार हरिजन बालक को आगे पढ़ने हेतू सहायता देने हेतु प्रार्थना आई। उन दिनो पढ़ने के लिये आर्थिक सहायता देने हेतु चौधरी छोटूराम के वेतन का हिसाब–किताब उनका डाईवर रखता था। चौधरी साहब ने अपने ड्राईवर से कहा कि इसका वजीफा बांध दो। ड्राईवर ने उत्तर दिया –"चौधरी साहब मेरे पास तो आपके गावों के दौर पर आने जाने हेतू तथा रास्ते में फल बगैरा लेने हेतू पैसे बचे हैं। चौधरी ने कहा

कि फल रहने देना, इसका वजीफा लगा दो और रास्ते में खाने के लिए गांव के भडभूंज्जे से भूने हुये चने ले लेना। हम किसान महाभारत युद्ध में हैं। युद्ध फौजी जवान भी मोर्चे पर भूने चने ही खाकर युद्ध लड़ता है।" जिस हरिजन बालक का वजीफा वाँधा था वह बालक कथा – चौ० चांदराम जो हरियाणा तथा केन्द्र में बाद में मंत्री बनें।

किसान महाभारत युध्द चलते–चलते 1937 आ गया। यूनियनिस्ट किसान शक्ति ने लाहौर में अपनी सरकार बनाली। शेरे–ए–पंजाब अविजित महाराजा रणजीत सिंह की राजधानी– लाहौर से किसान शक्ति की लोकवाणी होती है–हम अविजित पुरखो की अविजित सन्ताने! चौधरी छोटूराम पंजाब यूनियनिस्ट सरकार के रहनुमा अपनी विवेक शक्ति कलम के माध्यम से बह्मशस्त्र चलाते हैं–निरन्तर न्याय संगत कानूनों का तीव्र प्रहार होता है – बाट, तराजू बहीखाते, रहनजमी के कागजात धराशाही हो जाते है, शोषक ताकते – सूद खोर महाजन, तिजारती त्राहि–त्राहि करती हैं छोटूराम के क्रांतिकारी कानूनो के आगे न शहरी वर्ग कुछ कर पाता है और न ही अंग्रेजी सरकार। दूसरा विश्वयुद्ध प्रारम्भ था और पंजाब के रहबरे आजम चौधरी छोटूराम बसन्त पंचमी पर्व 'किसान राज' की उद्घोषणा करते हैं, किसान महाभारत युद्ध विजेता दीनबंधु होजाते हैं अर्थात शोषित दबे कुचले, हरिजन व दलित समाज संयुक्त रूप से उच्च स्वर में मुखरित होते हैं? "ग्रामीण शोषण उन्मूलन के क्रांतिकारी चौधरी छोटूराम की जय!!!

जय, जय, जय छोटूराम गाँव रखवाले 1940 में मुस्लिमलींग की स्थापना के बाद पंजाब को जिन्ना मुस्लिम साम्प्रदायिकता का ऐतिहासिक गढ़ बनाने में तुले थे। सब की दृष्टि पंजाब पर लगी थी, वहां लौहपुरुष चौधरी छोटूराम – हर मन प्यारे की कर्मभूमि थी जिनका आत्मबल इतमा अधिक था कि जिन्ना के संबंध उन्होंने लाहौर में उद्घोषणा करडाली। "यह शेरे पंजाब महाराजा रणजीत की पाकजमी है, जब वे कभी नहीं हारे तो मैं भी किसी से मात खाने वाला नही हूँ, वही खून वही पवित्र बसुन्धरा, मै शेरे–ए–पंजाब का पडपोता जिन्ना को कैसे प्रवेश होने देने पर इस जमी को अपवित्र करने की इजाजत दूं।" और जबतक चौधरी छोटूराम लाहौर में काबिज रहे जिन्ना पंजाब में अपना प्रभुतत्व जमाने में असमर्थ रहे। बार–बार टक्करें मार–मार कर भी जिन्ना सांपलागढ़ी की माटी के छोटूराम पर विराट के छोटूरामगढ़ लाहौर की फाटक में पैर भी न रख सकें और दिल मसोसकर वह कलाल बड़ी जिल्लत के साथ बंबई वापिस मुडे। इसपर एक अंग्रेजी पत्रकार ने टिप्पनी भीकी थी "जिन्ना से गांधी जी हारे, पर छोटूराम से जिन्ना हारे – अति अद्भुत"

आजकल कई संस्थाओं में इतिहासकारों, सामाजिक तथा आर्थिक विश्लेषको से छोटूराम व्यक्तितत्व के संबंध में मैं एक गहन बात सुनता हूं "राष्ट्र–सन्तति इतने लम्बे समय तक रेग्से प्रेरणा स्रोत (छोटूराम दर्शन) में स्नान करने से क्यों वंचित रही? इस त्रुटि के लिए हम सभी अक्षम्य हैं। क्यों इस विराट जीवन पर अनुसंधान न हो पाया। बीसवीं सदीं के पूर्वाध में रूस क्रांति, चीनक्रांति तथा पंजाब किसान क्रांति आई। रूस क्रांति व चीन क्रांति रक्तभरी क्रांतियां थी। इसपर खूब चर्चा हुई, इतिहासकारों ने अनेक पुस्तके लिखी, परन्तु रक्तहीन पजाब किसान क्रांति पर सभी मौन रहे – कुछ नही लिखा गया। लेनिन और माओ ऐतिहासिक हस्तियाँ बनगई पर चौधरी छोटूराम पंजाब किसान क्रांतिके पुरोधा अब भी इतिहास के पन्नो से गायब, क्यो ?

चौधरी छोटूराम के ग्रामीण समाज संगठन के योगदान ही पर हमसभी आज भी अनभिज्ञ बने बैठे हैं। छोटूराम–अम्बेदकर दर्शन आजादी के बाद बिल्कुल दबा दिया गया। दूसरा राजनैतिक प्रहार छोटूराम, महाराजा महेन्द्र प्रताप दर्शन पर हुआ जिसके कारण जाटो को राजनैतिक जीवन से निष्कर्ष करने की प्रक्रिया शुरु हुई। इस षडयंत्र के विरुद्ध चौ चरणसिंह ने आवाज तो उठाई, परंतु जाट समुदाय भी चौधरी साहेब के साथ एकजूट होकर खड़ा नहीं हुआ। हम किसानो ने पिछडी जातियो–खाती, लुहार धोबी, नाई, हरिजनों को अपना सहयोगी मानकर उन्हें परिवार का हिस्सा बनाये रखा। जिसे छोटूराम–अग्बेदरकर दर्शन कहा जाता है। परन्तु कुछ राजनैतिक षड्यंत्र कर्त्ताओ ने इस संगठन को 35+1 का रुप देकर खंडित कर दिया और यह 21वीं सदी की जाटो की महानतम त्रास्दी बन गई। आज समुदाय में तो राजनैतिक नेतृत्व की शून्यता अनुभव हो रही है। हमें इसकी अनुभूतियां भी हो चुकी हैं। मेरा तो मानना है कि हमें छोटूराम–अम्बेडकर दर्शन को पुनः घर–घर तक पहुंचाना होगा। इससे अधिक कुछ नहीं बचा है। चौ० छोटूराम का सक्रिय जीवन 31 साल का रहा और उनका सम्पूर्ण जीवन 62 साल, पर किसान को अन्नदाता का सम्मान उन्होंने दिलवाया व किसान राज पंजाब में उन्होंने लाया – आज किसान तो मुन्शी प्रेमचन्द का हारी हो गया रे।

UNSUNG ASSOCIATES OF MAHATMA GANDHI

- Prof. R.N. Malik (Engineer-in-Chief(Retd),
Mob.: 9911078502)

Indulal Yagnik (22.2.1892-17.7.1972)

Indulal Yagnik was a multifaceted personality. He was a freedom fighter, ardent Gandhian, crusader of Farmer's cause, pioneer of Gujrat statehood campaign, journalist, prolific writer, film maker and playwright. He was part of the famous trio of " Umar Sobhani, Shankerlal Banker and Indulal Yagnik." The first contact of trio with Gandhi Ji took place at the Gujrat Sabha session in Ahmedabad in April 1917. Thereafter, the trio remained at the back and call of the Mahatma.

Yagnik was born in a Brahimin family in a village near Nadiad in Kheda district of Gujrat in February 1892. After passing his intermediate exam from Gujrat college Ahemdabad, he shifted to Bombay and did his Law from Bombay University in 1914. There, he was greatly influenced by the Home Rule Lehar generated by Annie Besant and Lokmanya Tilak in 1916. Dwarkadass, Bunker and Yagnik opened the first branch of Home Rule League at Bombay. Further, Yagnik and Shankerlal Banker played a pivotal role in the Farmer's Satyagraha under Sardar Patel in Kheda district of Gujrat in 1918. Success of Kheda Satyagraha was the second victory of Nonviolent Movement after the Champaran Satyagraha.

The trio were among the first 20 followers of Gandhi Ji to sign the pledge drafted by him at Ahmedabad in February 1919 in protest against the passage of two draconian Rowlatt Bills in the Central Assembly. The theme of the pledge was an open declaration of Disobedience of the authority of the British Empire- a very courageous step indeed as it invited straightaway imprisonment for six years. Lokmanya Tilak had been imprisoned for six years (1908-14) just for writing and publishing two articles in his newspaper Kesri and was deported to Mandalay jail in 1908.

Yagnik and Banker had been publishing two periodicals namely Young India and Navjeewan from Bombay and Ahmedabad respectively. Now they requested Gandhi Ji to take over their editorship. Gandhi Ji accepted the offer thankfully in July 1919 as he too needed a media vehicle for the transmission of his thoughts to the general public. Thereafter, the circulation of the two periodicals soared very high and the monthly papers became bi-weekly.

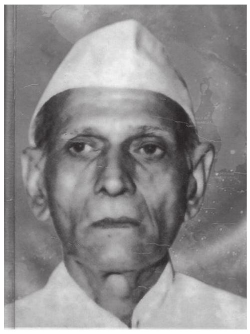

After the withdrawal of the Non-cooperation Movement in February 1922, Yagnik engaged himself in his journalistic activities and started editing two more weeklies namely Hindustan and Yugdharam. He also worked as Assitant Editor of famous nationalist paper Bombay Chronicle for one year. He was imprisoned for a year in 1923.

Yagnik toured European countries from 1930 to 1935 to study the agricultural system and lives of farmers in European countries. After returning to India, Yagnik immersed himself in organising the the farmers of India in general and those of Gujrat in particular. Accordingly, he set up the All India Farmer's Organisation and Gujrat Kisan Parishad in 1936. Thereafter, he diverted his entire attention to the Farmer's cause till 1956. However, he was again imprisoned for a year during the Individual Satyagraha of Gandhi Ji in 1940.

Yagnik's next innings started in 1956 when he came at the forefront of Movement of Gujrat Statehood and set up Mahagujrat Janta Parishad. The campaign culminated into success when Gujrat was declared a separate State in April 1960. During this tumultous period, Yagnik fought and won two Lok Sabha elections as Gujrat Janta Parishad candidate in 1957 and 1962 respectively. Defeating a Congress candidate in those days was almost an impossible task.

After 1967, Yagnik spent the rest of his life in editing one more periodical Nutan Gujrat, writing Children's books and producing films on similar themes. He also wrote many books including four volume autobiography. He died in July 1972. What an accomplished life Yagnik Ji led!

LIST OF DONORS

Dr. Rajbir Singh Takshak, Advocate **151000.00**
#796/28, Bharat Colony, Rohtak

Sh. B. S. Gill **132000.00**
43, Sector 12-A, Panchkula.

Smt. Sumitra Devi w/o Sh. Satya Parkash **111000.00**
1109, Sector 4, Panchkula.

Sh. Satbir Singh Punia **56100.00**
Flat No. 703, Alpha Apartment, Sec-17, Panchkula.

Dr. Vijendar Singh Ahlawat **51001.00**
940/22, Vijay Park, Rohtak (Haryana)

Sh. Narender s/o Sh. Jai Singh Thekedar **51000.00**
Park Road, Gohana, Distt. Sonepat.

Mrs. Kaushlya Choudhary **51000.00**
w/o Sh. Gopi Ram
A-2/6, 3rd Floor, DLF Valley, Panchkula.

Mr. Justice Rameshwar Singh Malik (Rtd) **51000.00**
B-13, May Fair Gardens, Hauz Khas New Delhi.

Dr. M. S. Malik, IPS (Rtd.) **51000.00**
222, Sector 36-A, Chandigarh.

Sh. Ramesh Kumar Malik **21000.00**
VPO: Pinana Distt. Sonepat (Haryana)

Sh. Himanshu Chahal **21000.00**
1295-P, Sector 12, Sonepat (Haryana)

Sh. Rohtash Singh Dabas **21000.00**
Block C, 25-B/18, Vikas Nagar Shimla.

Sh. Bhupinder Rathee **21000.00**
3389, Sector 19 Chandigarh.

Sh. Anil Redhu **21000.00**
VPO: Dalamwala, Distt. Jind (Haryana)

Sh. Iqbal Singh Chhikara **21000.00**
1105-G, Sector 14, Panchkula.

Sh. Sidharth Singh Kondala **21000.00**
90, Sector 23, Panchkula.

Sh. Sultan Singh, IFS (Rtd.) **21000.00**
714, Sector 12, Panchkula.

Sh. Rajbir Rajain **21000.00**
991/34, Vijay Nagar, Rohtak (Haryana).

Sh. Yogendar Singh Sangwan **21000.00**
Flat No. 601, GH-93, Sector 20, Panchkula

Sh. Vinay Pal Sangwan **21000.00**
1226, Sector 11, Panchkula

Sh. Raj Pal Mor **21000.00**
VPO: Redhuwas Matanhail, Distt. Jhajjar (Haryana)

Sh. R. N. Malik **21000.00**
E1/5, Arjun Marg, DLF Gurugram.

Sh. Sadhu Ram Jakhar, **21000.00**
657, Sector 6, Panchkula.

Sh. Anil Kumar **11000.00**
C-38, Barrier Colony, Raipur Khurd (U.T.)

Sh. Jai Pal Punia **11000.00**
507, Sector 21, Panchkula.

Sh. Gobind Singh, Ex-Sarpanch **11000.00**
VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind (Haryana)

Sh. Virendar Singh Malik, Sarpanch **11000.00**
VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind (Haryana)

Sh. Ram Tirath, Sarpanch **11000.00**
VPO: Ramakali, Distt. Jind (Haryana)

Sh. Raja s/o Sh. Maha Singh **11000.00**
VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind (Haryana)

Sh. Vikram Singh s/o Sh. Ishwar Singh **11000.00**
VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind (Haryana)

Sh. Randhir Singh Gulia **11000.00**
Flat No. 401, Tower-8-A, Suncity, Sec-20, Panchkula.

Mrs. Kamal Balhara **11000.00**
w/o Late Sh. Ishwar Singh Balhara, Adv.
165, MDC, Sector 4, Panchkula.

Sh. Ashok Kumar Sheokand **11000.00**
284-P, Sector 12, Panchkula.

Col. O. P. Dahiya **11000.00**
127, Sector 18-A, Chandigarh.

Sh. N. K. Payal **11000.00**
617, Sector 6, Panchkula.

Brig. S. C. Rangi **11000.00**
6374-B, Rajeev Vihar, Manimajra.

Sh. Krishan Malik **5100.00**
VPO: Kharawar, Distt. Rohtak (Haryana)

Sh. Raj Kumar Malik **5100.00**
2288, Sector 21, Panchkula.

Sh. Mohinder Singh Punia **5100.00**
VPO: Danaura, Distt. Ambala (Haryana)

Sh. D.R. Kairon, HCS (Rtd.) **5100.00**
1106, Jalvayu Vihar, Sector 20, Panchkula.

Sh. Raj Singh Gulia **5100.00**
101, Tribune Mittar Vihar, Sector 26, Panchkula.

Sh. Ranbir Singh Malik **5100.00**
VPO: Shamlo Kanan, Distt. Jind (Haryana).

Mrs. Savitri Deswal **5100.00**
623, Sector 7, Panchkula.

Mrs. Kesari Pannu **5100.00**
w/o Sh. Hawa Singh Pannu, # 305, Sec-21, Panchkula

Sh. Devendar Malik **5100.00**
Haripur, Sector 4, Panchkula.

Sh. Satbir Singh Kharb **5100.00**
VPO: Kohoni, Distt. Rohtak (Haryana).

Mrs. Jyoti Kadyan **5100.00**
w/o Dr. Bhup Singh Khatri
309, Chinar Heights, Peermuchhala (PB.)

Sh. Om Parkash Beniwal **5000.00**
812, Sector 25, Panchkula.

Sh. Ranbir Singh Budhwar **5000.00**
503, Sector 27, Panchkula.

Sh. Om Parkash Kadyan **3100.00**
377, Sector 12, Panchkula.

Sh. Mahendar Singh Sheoran **3100.00**
Flat No.501, GH-03 B, Sector 27, Panchkula.

Sh. Har Narain, DSP (Rtd.) **2500.00**
Near Radha Swami Satsant, Bhiwani.

Dr. Savita Dhankhar **2100.00**
Education Department, Haryana.

Sh. Joginder Singh Dhillon **2100.00**
1330, Sector 21, Panchkula

Sh. Attar Singh Pawar **2100.00**
969, Sector 26, Panchkula.

Sh. Harpal Singh Chaudhary **2100.00**
316, Sector 9, Panchkula.

Sh. Satish Makroli **2100.00**
VPO: Makroli Khurd, Distt. Rohtak (Haryana)

Sh. Satbir Singh Malik **2100.00**
VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind (Haryana)

Sh. Ram Phal Nain **2100.00**
658, Sector 21, Panchkula.

Sh. Ramesh Malik, Advocate **2100.00**
403, Merry Gold Block, Amrawati, Panchkula.

Sh. Anand Singh Dhonchak **2100.00**
1378, Sector 21, Panchkula.

Sh. Mewa Singh Dhull **2100.00**
VPO: Harsola, Distt. Kaithal (Haryana).

Sh. Subh Ram Singh Malik **2100.00**
VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind (Haryana).

Sh. Mahendar Singh Kaliraman **2100.00**
1697, Sector 15, Panchkula.

Sh. Maha Singh Sehrawat **2100.00**
183-A, NAC, Manimajra.

Sh. Rakesh Gill **2100.00**
922, Sector 25, Panchkula.

Sh. Jaivir Singh Malik **1100.00**
VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind (Haryana)

Sh. Dilbag Singh Malik **1100.00**
VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind (Haryana)

Sh. Satbir Singh Khodan **1100.00**
1880, Sector 26, Panchkula.

Sh. Ramesh Siwach **1100.00**
Flat No. 502, GH 2, Sector 24, Panchkula.

Sh. Bijender Punia **1100.00**
VPO: Bichpari, Distt. Sonepat (Haryana).

Sh. Randhir Singh Malik **1100.00**
495, Sector 25, Panchkula.

Sh. Dharam Pal Loura **1100.00**
132-P, Sector 21, Panchkula.

Sh. Naresh Dahiya **1100.00**
219, Sector 23, Panchkula.

Sh. Mahabir Singh **1100.00**
516, Sector 12 -A, Panchkula.

Sh. Pritam Singh **1100.00**
768, Sector 27, Panchkula.

Sh. Jai Singh Jatan **1100.00**
898-G, Sector 11, Panchkula.

Sh. Jasbir Singh Thol **1100.00**
Former Deputy A.G. Haryana

Sh. Mahavir Singh Phaugat **1100.00**
217, Saini Vihar, Baltana, (Punjab)

Sh. Rajendar Singh Dahiya **1100.00**
39, Modern Enclave, Baltana, (Punjab)

Master Raj Pal Malik **1100.00**
VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind (Haryana)

Master Balbir Sharma **1100.00**
VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind (Haryana)

Sh. Jai Parkash Malik **1100.00**
VPO: Shamlo Kalan, Distt. Jind (Haryana)

Sh. Ishwar Singh Malik **1100.00**
2811, Sector 21, Panchkula.

Sh. Maya Chand **1100.00**
1157, Sector 25, Panchkula.

Sh. Prem Singh Deswal **1100.00**
Rajeev Vihar, AWHO, Sector 13, Panchkula.

Sh. Wazir Singh Kharb # 1589, Sector 28, Panchkula.	**1100.00**	**Subedar Ajit Singh Hooda** 11/2 C, Railvihar, MDC, Sector 4, Panchkula	**1100.00**
Sh. D. S. Malik # 1438, Sector 4, Panchkula.	**1100.00**	**Dr. Jagdeep Malik** # 464, Sector 2, Panchkula	**1100.00**
Dr. U. S. Malik # 194, Sector 8, Panchkula.	**1100.00**	**Sh. Prem Singh** Jat Bhawan, Chandigarh	**1100.00**
Mrs. Gyatri Kadyan Panchkula	**1100.00**	**Sh. Sumer Singh** Jet Bhawan, Chandigarh	**1100.00**

वैवाहिक विज्ञापन

- *SM4 Jat Girl (DOB 1995) 29/5'3" BAMS, MD Pediatrics. NTET passed. Required match Doctor, Professor, Lecturer. Avoid Gotras: Kharb, Siwach, Malik. Cont.: 9464177315*
- *SM4 Jat Girl (DOB 01.01.98) 27/5'4" B.Com from Punjab University. Employed as Air Hostess in Indigo. Salary Rs. Ninety thousand per month. Father serving in Indian Air Force as JWO. Own house in Zirakpur (Punjab). Avoid Gotras: Ravish, Mor, Ghanghas. Cont.: 9914092495*
- *SM4 Jat Girl (DOB 07.03.97) 27/5'1" B.Sc. Math (Hons.), from Delhi University, M.Sc. Statistics from M.D.U. Working as Software Test Automation Engineer Deloitte Banglore. Salary Rs. 11.6 LPA. Father JWO in Indian Air Force. Mother housewife. Family settled at Rohtak. Avoid Gotras: Dalal, Gahlout, Dhochak. Cont.: 9790899428*
- *SM4 Jat Girl (DOB 08.01.99) 25/5'1" B. Sc., M.Sc., Preparing for UPSC exam. Father in Government service. Mother housewife. Family Business: Commission Agent (Anaj Mandi) and Pesticide Shop at Fatehabad (Haryana. Avoid Gotras: Garhwal, Mehra, Dhaka, Saharan. Cont.: 9467744400*
- *SM4 Jat Girl (DOB 18.01.95) 29/5'3" Post Graduate form Punjab University. Own business of immigration in Chandigarh. Father employed as Driver in Excise & Taxation Department Haryana at Kaithal. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Malik, Sangdoya, Sharan. Cont.: 9876931608, 9876085624*
- *SM4 Jat Girl (DOB 19.11.91) 33/5'3" B.Tech.(ECE). Post Graduate Diploma in Housing Finance. Working in Central Government PSU, LIC as Assistant on regular basis near Chandigarh. Transferable anywhere in India. Salary Rs. 8.5 LPA. Family settled at Panchkula. Preferred well settled city based family in Chandigarh, Panchkula, Hisar. Avoid Gotras: Thaken, Sindhu, Mahala, Sheoran. Cont.: 8557033198*
- *SM4 Jat Girl (DOB 28.02.93) 31/5feet. B. Tech. in Computer Science, Diploma in Computer Science, M. Tech. in Software Engineering. Working in reputed MNC at Chandigarh. Salary Rs. 8 LPA. Father retired Divisional Head Draftsman from Haryana government. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal, Sheoran. Cont.: 9417333298*
- *SM4 Jat Girl (DOB 08.05.97) 27/5'4" B. E (CSE), MBA. Working in IT Company in Pune. Income Rs. 18 LPA. Father retired from FAFED as Deputy Manager, now practicing in High Court as Advocate. Mother Advocate District Court. Family settled at Chandigarh. Preferred match in Tri-city. Avoid Gotras: Malik, Mahala. Cont.: 9417105281*
- *SM4 Jat Girl (DOB 07.11.93) 33/5'6" B. Tech. (IP University), MBA IBS Bombay. One year PG Diploma from IIM Rohtak. Working in Grip Private Ltd. Gurugram, 15 Lac CTC per annum. Family settled at New Delhi. Avoid Gotras: Rathi, Sansanwal, Sukhala. Cont.: 9891777389*
- *SM4 Jat Boy (DOB 17.11.94) 30/5'3" MBA (Post Graduate), B. Com. (Graduation) from ICFAI Business School Punjab University. PGDM, PG Certificate Program in Managing Brands & Marketing Communications. Working in Deloitte Office of India Gurugram. Salary Rs. 16 LPA. Father ETO in Haryana Government. Mother housewife and well educated. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Kodan, Nandal, Hooda, Kharb. Cont.: 9468274677.*
- *SM4 Jat Girl (DOB 07.09. 97) 27/5'8" B. Tech. (CS) from YMCA Faridabad. Employed as Probationary Officer in State Bank of India since April, 2022. Pursuing for I.A.S. Father M. D. Cooperative Bank Fatehabad. Mother housewife (MA, B.Ed.) Avoid Gotras: Pattar, Moun, Goyat, Dhull, Punia. Cont.: 9467210303*
- *SM4 Jat Girl (DOB 08.08.96) 28/5'4" BSC (Non-Medical). M. A. English. Employed as Accountant (Non transferable) in the office of Principal Accountant General (A&E) Haryana, Chandigarh. Father employed in a reputed Fertilizer & Chemical Company. Mother housewife. Family settled at Kurukshetra (Haryana). Avoid Gotras: Sheokand, Goyat. Cont.: 8199998908*
- *SM4 Jat Girl (DOB 04.03.98) 26/5'3" Lieutenant in Indian Army in EME branch. Posted in J & K area. Younger brother also Lieutenant in Indian Army. Father serving in Air Force. Mother Housewife. Avoid Gotras: Malik, Dhillon, Dangi. Cont.: 9541692438.*
- *SM4 Jat Girl (DOB 31.01.95) 28/5'1" B.Sc., M.Sc. (Botany). UGC, NET qualified. Ph.D in Botany from P. U. Chandigarh. Employed as Assistant Professor in College at Karnal on contract basis. Father retired from Defence. Mother housewife. Family settled at Ambala Cantt (Haryana). Avoid Gotras: Rathi, Kharb, Rana. Cont.: 9812238950*
- *SM4 Jat Boy (DOB 1999) 25/ 173 cm. B. com, M.Com. Employed in Government in Haryana Civil Secretariat. Preferred match employed in government job. Avoid Gotras: Kharb, Siwach, Malik. Cont.: 9464177315*
- *SM4 Jat Boy (DOB 21.01.94) 30/5'11" B.A.LLB., LLM, International Commercial Law from Bournemouth University United Kingdom.*

Full time Restaurant Manager at Crab Restaurant Bournemouth. Father retired as Manager from Mahindra & Mahindra Ltd. Mohali. Mother retired from Haryana government. Own house in Chandigarh. Required match BCA, B.Sc., M.Sc., MBA, B. Tech. Willing to move to UK. Avoid Gotras: Khatkar, Panwar. Cont.: 9815554973

- *SM4 Jat Boy (DOB 27.10.93) 31/5'9" B. Tech. Mechanical, MBA from Punjab University. Employed as Sub Inspector in Punjab Police at Mohali. Father ASI in Chandigarh Police. Mother housewife. Preferred match height minimum 5'5". Avoid Gotras: Barak, Lathar, Narwal. Cont.: 9779666000, 8054575757, 7888808904*
- *SM4 Jat Boy (DOB 09.10.94) 30/5'9" B.A. Employed as Clerk in Chandigarh on contract basis. Father expired. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Kundu. Cont.: 9888140762, 9888474668*
- *SM4 Jat Boy (DOB 28.06.96) 28/ 6feet. MCA. Working in IT at Chandigarh location. Income Rs. 14 LPA. Father Inspector in Chandigarh Police. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Sihag, Lathar, Redhu, Khatkar. Cont.: 9417862853*
- *SM4 Jat Boy (DOB 08.05.95) 29/5'11" B.Sc., B.Ed. Self Occupation of Freight Broker in Mohali. Salary 12 LPA. Rental Income Rs. 25000/-.4.5 acre agriculture land. Father serving in Indian Air Force as JWO. Own house in Zirakpur (Punjab). Avoid Gotras: Ravish, Mor, Ghanghas. Cont.: 9914092495*
- *SM4 Jat Boy (DOB 05.08.98) 27/ 6'1". Graduation. Employed as Assistant in CPWD at NIT Jalandhar (Punjab). Father occupation: Business. Mother housewife. Family settled at Sonepat. Avoid Gotras: Kharb, Tushir, Tokas. Cont.: 7027247620*
- *SM4 Jat Boy (DOB 07.03.93) 31/5'9" Graduate Diploma in Airlines form Punjab University. Own business of immigration in Chandigarh. Father employed as Driver in Excise & Taxation Department Haryana at Kaithal. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Malik, Sangdoya, Sharan. Cont.: 9876931608, 9876085624*
- *SM4 Jat Boy (DOB 20.06.96) 28/5'10" B. Tech Engineering from Punjab University Chandigarh. Working as Data Analyst with Innovaccer Noida. Salary Rs. 14.5 LPA. Also owns OPCA, a Car rental company in Chandigarh and generating handsome income. Father retired Inspector from Chandigarh Police. Mother housewife. Avoid Gotras: Lohchab, Hooda. Cont.: 8146991568, 9877640592*
- *SM4 Jat Boy (DOB 29.11.96) 28/5'11" B.C.A. Working as Software Engineer and Director at Bharat Software Pvt. Ltd. in Delhi. Father CMD of Bharat Group. Mother housewife. Family settled in Pinjore (Haryana). Avoid Gotras: Malik, Mahala. Cont.: 8556863972, 9417305287*
- *SM4 Jat Boy (DOB 19.05.91) 33/5'9" B. Tech. Own business. Family settled at Panchkula. Elder brother married and settled in Canada. Avoid Gotras: Malik, Nandal, Dagar. Cont.: 9417005229, 9872344990.*
- *SM4 Jat Boy (DOB 25.03.91) 33/5'8" Convent educated B. Com., M. Com. PGDMM, Lawer in High Court & Supreme Court. (Own law firm) and investment business. Father retired Chief Manager from Bank. Mother housewife. Avoid Gotras: Kadyan, Chaudhary. Cont.: 8847369779.*
- *SM4 Jat Boy (DOB 23.12.97) 26/5'6" M.Tech. from NIT Jalandhar. B. Tech (Hons. ECE) from Punjab University. Job SOC Design Engineer in Intel Technology, Banglore (work from home). Father retired from Army, currently Centre Government Employee in CSIR-CSIO, Chandigarh. Mother housewife. Two acre agriculture land. Two residential property (house & flat) near Chandigarh and other property. Avoid Gotras: Gahlyan, Kadyan, Malik. Cont.: 9878873267*
- *SM4 Jat Boy (DOB 11.03.94) 30/5'6" Civil Engineer. Own business of Computer & Laptop. Fathr Deputy Director retired from Haryana government. Own house at Chandigarh. Avoid Gotras: Mor, Bidhana, Kundu. Cont.: 7347434164, 9417629568*
- *SM4 Jat Boy (DOB 30.09.96) 28/6'1" B.Sc. Non Medical, M.Sc. Chemistry. NET qualified. Employed as Assistant Professor in D. N. College, Hisar. Avoid Gotras: Dhaka, Khicher, Mawlia. Cont.: 9467139890, 9416439890*
- *SM4 Jat Boy (DOB 20.02.94) 30/5'10" B.A., B.Lib., M.Lib., Servicing in IOCL Government of India Undertaking, posted at Air Force Station Chandigarh. Income 15 LPA. Father Branch Post Master & Farmer. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras:Barak, Malik, Hooda Cont.: 9896554668, 9812055342, 8383814903.*
- *SM4 Jat Boy (DOB 01.09.93) 31/5'11" Graduate. Serving in Indian Railway Ludhiana. Father Branch Post Master & Farmer. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras:Barak, Malik, Hooda. Cont.: 9896554668, 9812055342, 8383814903.*
- *SM4 Jat Boy (DOB 07.11.96) 28/6'2" Pursuing B. A. Working in IOCL Government of India Undertaking at Banglore AFS. Salary Rs. 15 LPA. Father Branch Post Master & Farmer. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras:Barak, Malik, Hooda. Cont.: 9896554668, 9812055342, 8383814903.*
- *SM4 Jat Boy (DOB 27.01.97) 27/5'10" Working as Production Manager in UPG Electronics Newzeland. PR in Newzeland. Avoid Gotras: Sheoran, Kaliraman, Bhalothia. Cont.: 9216524694.*
- *SM4 Jat Boy (DOB 13.10.94) 30/6'4" Bachelor in Computer Science from San Diego University USA. MS (CS) from University of Cumberland's USA. Pursuing PhD. In USA. Job in MNC USA and staying in New Jersey. Income 110-115k USR PA. Father lecturer. Mother Class-I officer in PSU. Family settled at New Delhi. Avoid Gotras: Dahiya, Sehrawat, Saroha. Cont.: 9315574231*
- *SM4 Jat Boy (DOB 09.09.97) 27/ 6feet. B. Tech (Computer Science). M.B.A. employed as Software Engineer in Rocket Software Pune with package Rs. 16 LPA (work from home). Father retired Supervisor form HMT Pinjore (Haryana). Mother housewife. Own house in Pinjore. Own coaching institute at Pinjore with income of Rs. 31 lakh PA. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881*
- *SM4 Jat Boy (DOB 28.06.96) 28/ 6 feet. MCA. Working in IT at Chandigarh location. Income Rs. 14 LPA. Father Sub Inspector in Chandigarh Police. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Sihag, Lather, Redhu, Khatkar. Cont.: 9417862853*
- *SM4 Jat Boy (DOB 15.01.94) 30/ 6 feet. MBBS, M.D. in Medician. Only son. Father businessman. 20 acre agriculture land. Two Aahrat shops at Fatehabad. Preferred match of same profession. Avoid Gotras: Bharia, Saharan, Bhidaria. Cont.: 7015176069*

बसंत पंचमी एवं दीनबंधु छोटूराम का जन्मोत्सव की झलकियां

जाट सभा ने बसंत पंचमी एवं दीनबंधु छोटूराम का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया

हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं जाट सभा पंचकूला ध्चंडीगढ़ के अध्यक्ष डॉ महेंद्र सिंह मलिक की अध्यक्षता में बसंत पंचमी एवं दीनबंधु छोटूराम का 144 वां जन्म दिवस सर छोटू राम जाट भवन सेक्टर 6 पंचकुला में दीनबंधु सर छोटू राम की जयंती धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर प्रधान डॉ महेंद्र मलिक ने एवं विशेष अतिथिओ द्वारा दीनबंधु सर छोटू राम की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन करते हुए याद किया। और कहा कि दीनबंधु सर छोटू राम ने सर्व समाज के उत्थान के लिए कार्य किया जिस कारण सर्व समाज श्रद्धा पूर्वक उन्हें याद करते हुए नमन करता है। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में दीनबंधु सर छोटू राम को याद करते हुए कहा कि वह ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने शिक्षा की अलख जगाने का प्रयास किया और समाज के दबे कुचले पिछड़ों वर्गों के उत्थान के लिए अनेक कार्य किए। विशेष अतिथिओ द्वारा ने भी दीनबंधु सर छोटू राम को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए उन्हें याद करते हुए कहा कि दीनबंधु सर छोटू राम ने किसानों की भलाई के लिए अनेक कार्य किए। इस समारोह में शहीदों के परिवारजनों, प्रतिभावान विद्यार्थियों, उत्कृष्ट खिलाड़ियों को सम्मानित किया इस अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय जस्टिस रामेश्वर सिंह मलिक पंजाब एंड हरियाणा हाई कोर्ट रिटायर्ड पहुंचेऔर विशेष अतिथि के रूप में सुखनन्दन चोधरी पूर्व मंत्री जम्मू और कश्मीर, अशोक चोधरी के ऐ एस, सरदार सर्वजीत जोहल प्रधान सेवा सदन जम्मू, रामकुमार मलिक सीनियर एडवोकेट, जस्वीर बंटी सीनियर डुपटी मेयर चंडीगढ़, तरुण मेहता डुपटी मेयर चंडीगढ़, कृष्ण मलिक चेयरपर्सन गुरुकुल संस्था खानपुर, उपस्थित रहे इस अवसर पर कार्यक्रम में समाज के 80 वर्ष आयु वाले अधिकारियों और जाट सभा को 5 लाख दान देने वाले राजवीर सिंह तक्षक रोहतक, देशपाल तोमर, आर आर सोहरान, सुखवीर सिंह नांदल जयपुर को भी सभा की तरफ से सम्मानित किया गया इस समारोह में भारत के विभिन्न राज्यों से समाज के साथ साथ ट्रासिटी के अधिकारिओ ने भाग लिया

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़

फोन : **0172-5086180, M-9877149580**

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला

फोन : 0172–2590870,M-9467763337

Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।